आरती संग्रह

कल्पद्रुम विधान की आरती

तर्ज–माई रे माई.....

कल्पद्रुम की आरति करने, दीप जलाकर लाए हैं।
चारों दिश जिन दर्शन करके, हर्ष-हर्ष गुण गाए हैं॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन॥टेक॥
समवशरण की कृत्रिम रचना, पावन यहाँ बनाए हैं।
कमलाशन रच जिसके ऊपर, जिनवर को पधराए हैं॥
ऐसी अद्भुत रचना जग में, अन्य कही ना पाए हैं॥चारों...॥1॥
मानस्तंभों के दर्शन से, जाग्रत होता हैं श्रद्धान।
आठ भूमियाँ समवशरण में, शोभित होतीं आभावान॥
देवों द्वारा समवशरण में, प्रातिहार्य दिखलाए हैं॥चारों...॥2॥
धर्मचक्र सिर पर रखकर के, यक्ष खड़े हैं चारों ओर।
बारह सभाएँ सुरनर मुनि की, करती मन को भाव विभोर॥
तीर्थंकर जिन भवि जीवों को, दिव्य ध्वनि सुनाए हैं॥चारों...॥3॥
मंगल अष्ट द्रव्य शोभित हैं, गंध कुटी में मंगलकार।
कमलाशन पर श्री जिनेन्द्र की, अर्चा करते हम शुभकार॥
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सबको राह दिखाए हैं॥चारों...॥4॥
छियालिस मूल गुणों के धारी, दोष पूर्णतः किए विनाश।
पञ्चकल्याणक पाते श्री जिन, करते केवलज्ञान प्रकाश॥
पंच पाप का नाश किए जिन, पंचम गति शुभ पाए हैं॥चारों...॥5॥
समवशरण में श्री जिनेन्द्र के, ऋषिवर होते सप्त प्रकार।
स्वर्ग मोक्ष पदवी को पाते, निज-निज भावों के अनुसार॥
प्रभु की अर्चा करके हम शुभ, भाव बनाने आए हैं॥चारों...॥6॥
सहस्त्रनाम हैं श्री जिनेन्द्र के, जो गाए हैं मंत्र समान।
'विशद' भाव के द्वारा करते, आज यहाँ हम मंगल गान॥
दीप जलाकर आरति करने, आज यहाँ पर आए हैं॥चारों...॥7॥

समवशरण की आरती

तर्ज- जिनवर के चरणों में नमन....

आज करें हम समवशरण की, आरती मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, प्रभुवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती-2।टेक।।

कर्म घातियाँ नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया-2।
अनन्त चतुष्टय पाए तुमने-2, सुख अनन्त को पाया।हो जिनवर..।।1।।
इन्द्र की आज्ञा पाकर भाई, धन कुबेर यहाँ आया-2।
स्वर्ण और रत्नों से सज्जित-2, समवशरण बनवाया।हो जिनवर..।।2।।
स्वर्ग से आकर इन्द्रों ने शुभ, प्रातिहार्य प्रगटाए-2।
प्रभु की भक्ती अर्चा करके-2, सादर शीश झुकाए।हो जिनवर..।।3।।
जिनबिम्बों से सज्जित अनुपम, अष्ट भूमियाँ जानो-2।
श्रेष्ठ सभाएँ सुर-नर-मुनि की-2, विस्मयकारी मानो।हो जिनवर..।।4।।
ॐकार मय दिव्य देशना, अतिशय प्रभु सुनाए-2।
"विशद" पुण्य का योग मिला यह-2, प्रभु के दर्शन पाए।हो जिनवर..।।5।।

समवशरण लक्ष्मी की आरती

तर्ज-जिनवर के.....

समवशरण लक्ष्मी की करते, आरती मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाये, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारे तेरी आरती-2।टेक।।

पूर्वभवों में सोलहकारण, भव्य भावना भावें।
पुण्य योग से तीर्थंकर पद, का शुभ बंध जगावे।हो जिनवर...।।1।।
जन्म ज्ञान के दश-दश अतिशय, पाते हैं जिन स्वामी-2।

चौदह देवोंकृत अतिशय शुभ-2, प्रगटावें जगनामी।हो जिनवर...।।2।।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्रातिहार्य के धारी-2।
समवशरण में शोभा पावें-2 तीर्थंकर अविकारी।हो जिनवर...।।3।।
अष्ट भूमियाँ समवशरण में, गंधकुटी शुभकारी-2।
कमलाशन पर अधर प्रभु जी-2, शोभे मंगलकारी।हो जिनवर...।।4।।
समवशरण है बाह्य लक्ष्मी, अंतरज्ञान कहाये-2।
दर्शज्ञान चारित्र सुतपधर-2, 'विशद' ज्ञान प्रगटाये।हो जिनवर...।।5।।
ऋषि मुनि यति अनगार सुतप कर, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पावें-2।
भव्य जीव जिन अर्चा करके-2, निज सौभाग्य जगावें।हो जिनवर...।।6।।
विशद भाव से आरती करके, मनवांछित फल पावें-2।
लक्ष्मी का भण्डार बढ़े और, सुख शान्ति वह पावे।हो जिनवर...।।7।।

नन्दीश्वर की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है.....

नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं।
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।टेक।।

प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी-2।
जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी-2।नन्दीश्वर...।।1।।
अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़ियाँ शुभ जानो जी-2।
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशय कारी मानो जी-2।नन्दीश्वर...।।2।।
मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी-2।
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2।नन्दीश्वर...।।3।।
बावड़ियों के बाह्य कोंण पर, रतिकर विस्मयकारी जी-2।
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2।नन्दीश्वर...।।4।।
शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं-2।
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाए हैं-2।नन्दीश्वर...।।5।।

श्री सम्मेद शिखर की आरती

तर्ज-आनन्द अपार है.....

भक्ति का प्रसार है, महिमा अपरम्पार है।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत की, हो रही जय-जयकार है।।टेक।।

दूर-दूर से भक्त यहाँ पर, वन्दन करने आते हैं-2।
तीर्थ वन्दना करने वाले, जय-जयकार लगाते हैं-2।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की बन्धु, महिमा का न पार है।।श्री सम्मेद..।।1।।
बीस जिनेश्वर इस चौबीसी, के शिव पदवी पाएँ हैं-2।
कर्म नाशकर अन्य मुनीश्वर, शिवपुर धाम बनाए हैं-2।।
शाश्वत तीर्थराज मुक्ती का, मानो अनुपम द्वार है।।श्री सम्मेद..।।2।।
जीव अनन्तानन्त यहाँ से, आगे मुक्ती पाऐंगे-2।
हम भी उनके साथ में बन्धु, सिद्ध शिला पर जाऐंगे-2।।
स्वप्न सजाते हैं ऐसा जो, हो जाता साकार है।।श्री सम्मेद..।।3।।
भाव सहित वन्दन करने से, नरक पशू गति नश जाए-2।
दुष्कृत अल्प आयु भी बन्धू, वह प्राणी फिर ना पाए-2।।
जन-जन के जीवन में गिरि का, विशद बड़ा उपकार है।।श्री सम्मेद..।।4।।
तीर्थ वन्दना करने को हम, आज यहाँ पर आए हैं-2।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य जगाए हैं-2।।
'विशद' आत्मा का हमको भी, करना अब उद्धार है।।श्री सम्मेद..।।5।।

चौबीस तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र की आरती

तर्ज- करू आरती.....

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।।
करूँ आरती.....।।टेक।।

भव-भव के दुख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।करूँ...।।1।।
अष्टापद में आदिनाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।।करूँ...।।2।।
ज्ञान कूँट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूँट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूँट पर अरहनाथ की, संवर कूँट पर मल्लिनाथ की।।करूँ...।।3।।
संकुल कूँट पर श्री श्रेयांश की, सुप्रभ कूँट पर पुष्पदन्त की।
मोहन कूँट पर पद्म प्रभु की, निर्जर कूँट पर मुनिसुव्रत की।।करूँ...।।4।।
ललित कूँट पर चन्द्रप्रभु की, विद्युत कूँट पर शीतल जिनकी।
कूँट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूँट पर संभव जिनकी।।करूँ...।।5।।
कूँट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूँट पर अभिनंदन की।
अविचल कूँट पर सुमतिनाथ की, शांति कूँट पर शांतिनाथ की।।करूँ...।।6।।
कूँट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरू सुवीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।।करूँ...।।7।।
चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।।करूँ...।।8।।

चन्दन षष्ठी व्रताराध्य की आरती

तर्ज- ॐ जय....

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
तुम हो विघ्न विनाशक, हे अन्तर्यामी।
ॐ जय चन्द्र प्रभु स्वामी।।टेक।।
वैजयन्त से चयकर आये, चन्द्रपुरी स्वामी-2।
मात सुलक्ष्मणा महासेन सुत-2, मुक्ती पथ गामी।।ॐ जय..।।1।।
जन्म समय पर स्वर्ग लोक से, इन्द्र स्वयं आया-2।
न्हवन कराके पाण्डुशिला पे-2, अतिशय हर्षाया।।ॐ जय..।।2।।
यह संसार असार जानकर, तुमने दीक्षाधारी-2।
सन्त दिगम्बर बनके-2, हो गये अनगारी।।ॐ जय..।।3।।
केवलज्ञान जगाया तुमने, घाती कर्म क्षये-2।
ललित कूँट सम्मेद शिखर से-2, शिवपुर आप गये।।ॐ जय..।।4।।
चन्दन षष्ठी व्रताराध्य की, आरती हम गायें-2।
'विशद' सभी अपराध क्षम्य हो-2, अरदास यही लाये।।ॐ जय..।।5।।

जम्बूद्वीप की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है...

जम्बूद्वीप मनहार है, अतिशय मंगलकार है।
जिसमें जिनगृह जिनबिम्बों की, होती जय-जयकार है।।टेक।।
मेरु सुदर्शन चार वनों में, सोलह जिनगृह गाए हैं-2।
रत्नमयी जिनबिम्ब जिनालय, में अतिशय दिखलाए हैं-2।।जम्बू..।।1।।
चारों ही ईशान दिशाओं, में चउ गजदन्त बताए हैं-2।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, श्री जिन दर्श दिखाए हैं-2।।जम्बू..।।2।।
जम्बू शाल्मलि की शाखाओं, पर जिनगृह शोभा पाते-2।

सुर-नर विद्याधर भक्ती से, जिन दर्शन करने जाते-2।।जम्बू..।।3।।
गिरि वक्षार बताए सोलह, जिनमें जिनगृह सोहें जी-2।
हैं जिनबिम्ब मनोहर जिनमें, भविजन के मन मोहें जी-2।।जम्बू..।।4।।
चौंतिस हैं विजयार्ध अचल जो, रजतगिरि कहलाते हैं-2।
जिनके ऊपर जिनगृह में जिन, के दर्शन भवि पाते हैं-2।।जम्बू..।।5।।
रहे कुलाचल छह शुभकारी, जिनपर भी जिनधाम रहे-2।
रत्नमयी शाश्वत प्रतिमाओं, से शोभित अभिराम कहे-2।।जम्बू..।।6।।

गिरनार गिरि की आरती

तर्ज- जिनवर के चरणों में नमन...

जय-जय जिनवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
नेमिनाथ गिरनार सुगिरि को, वन्दन कर सुख पावें।।
जिनवर के चरणों में नमन, गिरिवर के चरणों में नमन।।टेक।।
सौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
इन्द्र कुबेर प्रसन्न हुए तब, रत्न वृष्टि करवाए।।
सौ-सौ इन्द्र चरण में आकर, जय-जयकार लगाएँ। नेमि..।।1।।
जूनागढ़ सौराष्ट्र देश में, सिद्ध क्षेत्र से स्वामी।
नेमिनाथ शम्बू आदिक मुनि, हुए मोक्ष पथगामी।।
जिनके चरणों में नत हो हम, सादर शीश झुकाएँ। नेमि..।।2।।
प्रथम टोंक में जिन मंदिर में, सोहें जिन प्रतिमाएँ।
अनिरुद्ध कुमार मुनि के द्वितिय, टोंक पे दर्शन पाएँ।।
शम्बु कुमार के तृतीय टोंक पे, पद में शीश झुकाए। नेमि..।।3।।
प्रद्युम्न कुमार मुनिवर जी चौथी, टोंक से मुक्ती पाए।
कठिन चढ़ाई के कारण हर, कोई वहाँ ना जाए।।
पञ्चम टोंक पे नेमिनाथ के, चरणों दर्शन पाएँ। नेमि..।।4।।
पुण्यवान प्राणी जो जग के, वे दर्शन को जावें।
तीर्थ वन्दना करके वे सब, निज सौभाग्य जगावें।।
'विशद' भावना भाते हैं हम, वन्दन को हम जाएँ। नेमि..।।5।।

दश धर्मो की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल....

दशधर्मो की आरति कीजे, परम धरम धर के सुख लीजे।टेक।।
प्रथम आरती क्षमा धरम की, मंगल मय शुभकार परम की। दश..।।1।।
दूजी आरती मार्दवकारी, मद का दमन किए मनहारी। दश..।।2।।
तीजी आरती आर्जव धारी, माया तजने से हो न्यारी। दश..।।3।।
चौथी आरती शौच धरम की, लोभ त्याग जिनधर्म परम की। दश..।।4।।
पाँचवी आरती सच की कीजे, सत्य वचन हिरदय धर लीजे। दश..।।5।।
छठी आरती संयम की है, इन्द्रिय दमन किए मुनि की है। दश..।।6।।
सातवीं आरती सुतप की जानो, मोक्षमार्ग का कारण मानो। दश..।।7।।
आठवीं आरती त्याग की गाई, त्याग धर्म जानो सुखदायी। दश..।।8।।
नौवीं आरती आकिञ्चन की, राग त्याग आतम चिन्तन की। दश..।।9।।
दशवीं आरती ब्रह्मचर्य की, ब्रह्मस्वरूप 'विशद' जिनवर की। दश..।।10।।
जो यह आरती मुख से गावे, उभयलोक में वह सुख पावें। दश..।।11।।

भक्तामर की आरती

तर्ज-जिनवर के चरणो.....

गाएँ जी गाएँ भक्तामर की, आरती मंगल गाएँ।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन-2।टेक।।
कृत युग के आदि में प्रभु जी, स्वर्ग से चयकर आए।
नाभिराय अरु मरुदेवी का, जीवन धन्य बनाए।।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, नर-नारी हर्षाए।। घृत..।।1।।
असि-मसि-कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का ज्ञान सिखाए।
नील परी की मृत्यू लखकर, प्रभु वैराग्य जगाए।।
विशद ज्ञान को पाए प्रभु जी, घाती कर्म नशाए। घृत..।।2।।
मानतुंग स्वामी के ऊपर, उपसर्ग भोज ने ढाया।

अड़तालिस तालों के अन्दर, मुनि को कैद कराया।।
टूट गई जंजीरें ताले, आदि प्रभु को ध्याए। घृत..।।3।।
अतिशय देखा भोजराज ने, मुनि को शीश झुकाया।
जैन धर्म के जयकारों से, सारा गगन गुंजाया।।
आदिनाथ प्रभु का आराधन, भव से मुक्ति दिलाए। घृत..।।4।।
कोड़ा-कोड़ी वर्ष बाद भी, प्राणी तुमको ध्याते।
आदिनाथ जिन भक्तामर को, सादर शीश झुकाते।।
'विशद' भक्ति की महिमा को यह, सारा ही जग गाए। घृत..।।5।।

चौंसठ ऋद्धि की आरती

तर्ज-ॐ जय.....

ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ, स्वामी चौंसठ ऋद्धि महाँ।
आरति करते हम मुनियों की, होवें जहाँ-जहाँ।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ।टेक।।
प्रथम आरति बुद्धि ऋद्धिधर, की करने आए-2।
ऋद्धि विक्रिया की करने को-2, दीप जला लाए।। ॐ जय...।।1।।
मुनि चारण ऋद्धी धारी के, चरणों शिर नाते-2।
तप ऋद्धिधारी मुनियों के-2, अतिशय गुण गाते।। ॐ जय...।।2।।
बल ऋद्धीधारी मुनियों के, बल का पार नहीं-2।
औषधि ऋद्धिधारी मुनिवर-2, मिलते कहीं-कहीं।। ॐ जय...।।3।।
रस ऋद्धीधारी मुनियों की, महिमा शुभकारी-2।
अक्षीण महानश ऋद्धीधारी-2, मुनिवर अविकारी।। ॐ जय...।।4।।
ऋद्धीधर मुनियों की आरति, मंगलरूप कही-2।
"विशद" आरती करने वाले-2, पावें मार्ग सही।। ॐ जय...।।5।।

इन्द्रध्वज विधान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है...

सिद्धों का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
भक्ति भाव से आज यहाँ पर, हो रही जय-जयकार है।।टेक।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक जिन सिद्ध कहे-2।
अष्ट कर्म से रहित प्रभु जी, ज्ञान शरीरी आप रहे-2।। सिद्धों...।।1।।
मध्यलोक में मणिमय शाश्वत, जैन गेह अविचल गाये-2।
जिनमें श्री जिनबिम्ब रत्नमय, अनुपम शुभ शोभा पाये-2।। सिद्धों...।।2।।
चार सौ अट्ठावन शुभ जिनगृह, तेरह द्वीपो में गाये-2।
जिनपर एक सौ आठ एक जिन, गृह में पावन बतलाए-2।। सिद्धों...।।3।।
कनकमयी सिंहासन पर जिन, पद्मासन में शोभ रहे-2।
काल अनादि अनन्त प्रभु जी, प्रातिहार्य संयुक्त कहे-2।। सिद्धों...।।4।।
श्री देवी श्रुत देवी प्रभु के, आर्श्व-पार्श्व शोभा पाएँ-2।
उभय लक्ष्मी धारी हैं जिन, ऐसी महिमा बतलाएँ-2।। सिद्धों...।।5।।
भक्तिभाव से इन्द्र सभी मिल, अर्चा करने आते हैं-2।
जिन मंदिर के ऊपर खुश हो, अनुपमध्वजा चढ़ाते हैं-2।। सिद्धों...।।6।।
इन्द्र ध्वज विधान की पावन, आरती हम यह गाते हैं-2।
"विशद" भाव से नत हो चरणों, सादर शीश झुकाते हैं-2।। सिद्धों...।।7।।

तत्वार्थ सूत्र की आरती

तर्ज-आज करे हम....

आज करे तत्वार्थ सूत्र की, आरती सब नर-नार-2।
घृत के दीपक लेकर आए-2, जिनवर के दरबार।।
ओ जिनवर, हम सब उतारे तेरी आरती-2।।टेक।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकार मय प्यारी।
गणधर द्वारा गुंथित की है-2, जग में मंगलकारी।। हो जिन...।।1।।
आचार्यो ने क्रमशः जिसका, मौखिक वर्णन कीन्हा-2।

पुष्पदन्त अरु भूतबलि ने-2, लिपिबद्ध कर दीन्हा।। हो जिन...।।2।।
उमास्वामी आचार्य ने अनुपम, रचना कीन्ही भाई-2।
शुभ तत्त्वार्थ सूत्र यह मनहर-2, कृति सामने आई।। हो जिन...।।3।।
सप्त तत्त्व छह द्रव्यों का शुभ, वर्णन जिसमें कीन्हा-2।
दश अध्याय के द्वारा अतिशय-2, मोक्षमार्ग शुभदीन्हा।। हो जिन...।।4।।
वह उपवास के फल को पावे, भाव सहित जो ध्यावें।
'विशद' भाव से पाठ करें अरु, आरति मंगल गावें।। हो जिन...।।5।।

अष्टान्हिका पर्व की आरती

तर्ज- हम सब उतारे तेरी आरती....

आज करें हम जिन बिम्बों की, आरति मंगलकारी-2।
घृत का दीप जलाकर लाए-2, हे प्रभु तुमरे द्वार।
हो जिनवर, हम सब उतारे तेरी आरती-2 ।।टेक।।
अष्ट कर्म को नाश प्रभु जी, सिद्ध परम पद पाए-2।
कर्म घातियाँ नाश के क्षायिक-2, नव लब्धी प्रगटाए।। हो जिन...।।1।।
भवन वासियों के भवनों में, जिनगृह मंगलकारी-2।
मध्यलोक में जिनगृह गाए-2, पावन अतिशयकारी।। हो जिनवर...।।2।।
ऊर्ध्वलोक के रहे विमानों, में जिनगृह प्रतिमाएँ-2।
व्यन्तर ज्योतिष के स्थानो-2, में जिन महिमा गाएँ।। हो जिनवर...।।3।।
क्षेत्रकाल गति आदि अपेक्षा, सिद्ध अनेक बताए-2।
पन्द्रह कर्म भूमियों से जिन-2, सिद्धश्री को पाए।। हो जिनवर...।।4।।
पर्व अठाई में सुर-नर-मुनि, श्री जिनेन्द्र को ध्याएँ-2।
कृत्रिमा कृत्रिम जिनबिम्बो की-2, अर्चा कर हर्षाएँ।। हो जिनवर...।।5।।
जिनगृह जिनप्रतिमाएँ जो हैं, विशद लोक में भाई-2।
हम परोक्ष आरति करते हैं, भव्यों को शिवदाई।। हो जिनवर...।।6।।
नाथ! आपकी अर्चा करके, अतिशय पुण्य बढ़ाएँ-2।
शिवपथ के राही बनकर के-2, मोक्ष महापद पाएँ।। हो जिनवर...।।7।।

सिद्धचक्र विधान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

सिद्धों का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
सिद्ध प्रभु की आज यहाँ पर, हो रही जय-जयकार है।टेक।।
ज्ञान दर्शनावरण आदि सब, प्रभु ने कर्म नशाए जी-2।
लोकालोक प्रकाशित अनुपम, केवलज्ञान जगाए जी-2।। सिद्धों...।।1।।
अष्टगुणों को पाने वाले, सिद्ध प्रभु अविकारी हैं-2।
भव्यों को सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी हैं-2।। सिद्धों...।।2।।
शुद्ध-बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सुख अनन्त के कोष कहे-2।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, पूर्ण रूप निर्दोष रहे-2।। सिद्धों...।।3।।
पर्व अठाई में मैना ने, सिद्धों का गुणगान किया-2।
पूजा भक्ति अर्चा करके, यथा योग्य सम्मान किया-2।। सिद्धों...।।4।।
करके जिन अभिषेक बिम्ब का, गंधोदक छिड़काया था-2।
कोढ़ रोग से श्री पाल ने, छुटकारा तब पाया था-2 ।।सिद्धों...।।5।।
जागे हैं सौभाग्य हमारे, हमको यह सौभाग्य मिला-2।
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, श्रद्धा का शुभ फूल खिला-2।। सिद्धों...।।6।।
सिद्धों के गुण गाने वाले, सिद्धों के गुण पाते हैं-2।
कर्म नाशकर अपने सारे, 'विशद' सिद्ध हो जाते हैं-2।। सिद्धों...।।7।।

तीस चौबीसी की आरती

तर्ज- हम सब उतारे.....

आज करें हम तीर्थंकर की आरति मंगलकारी-2।
तीस चौबीसी यहाँ विराजे-2, अतिशय मंगलकारी।
हो जिनवर, हम सब उतारे तेरी आरती-2 ।टेक।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, चौबिस-चौबिस पाएँ।
जम्बूद्वीप में भरतैरावत-2, के हम पूज रचाएँ।। हो जिनवर...।।1।।
पूर्व धातकी क्षेत्र में भाई, भरतैरावत वाले-2।

चौबिस-चौबिस श्री जिनवर को-2, पूजें भक्त निराले।। हो जिनवर...।।2।।
अपर धातकी द्वीप में जिनवर, भी होते अविकारी-2।
भरतैरावत के श्री जिनवर पद-2, पावन ढोक हमारी।। हो जिनवर...।।3।।
पुष्करार्ध पूरब में जिनवर, होते हैं अविकारी-2।
भरतैरावत के हम पूजें, जो पावन मनहारी।। हो जिनवर...।।4।।
पुष्यकरार्ध पश्चिम में जिनवर, चौबिस-चौबिस भाई-2।
भरतैरावत को हम ध्याते-2, जो हैं शिवपद दाई।। हो जिनवर...।।5।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, अनन्त चतुष्टय पाते-2।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर-2, दिव्य ध्वनि सुनाते।। हो जिनवर...।।6।।
भव्यजीव जिन अर्चा करके, अतिशय पुण्य कमावें-2।
'विशद' मोक्ष के राही बनकर-2, मोक्ष महापद पावें।। हो जिनवर...।।7।।

रक्षाबन्ध विधान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

गुरुवर का दरबार है, भक्ति अपरम्पार है।
मुनि अकम्पनाचार्य आदि की, हो रही जय-जयकार है।टेक।।
घृत का दीप जलाकर लाए, श्री मुनिवर के द्वार जी-2।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी-2।। गुरुवर...।।1।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्तशतक मुनिवर ज्ञानी-2।
धर्म साधना करने वाले, पावन थे जो कल्याणी।। गुरुवर...।।2।।
नगर हस्तिनापुर में जाके, पावन ध्यान लगाए थे-2।
बलि आदिक मंत्री मुनियों से, मन में वैर बनाए थे-2।। गुरुवर...।।3।।
जिनके ऊपर मंत्री छल से, बहु उपसर्ग कराए थे-2।
विष्णु कुमार मुनी ऋद्धी से, वह उपसर्ग नशाए थे-2।। गुरुवर...।।4।।
तब से श्रावण सुदि पूनम को, यह त्यौहार मनाते हैं-2।
वात्सल्यता जागे घर-घर, यही भावना भाते हैं।। गुरुवर...।।5।।
बहिने रक्षा सूत्र भाई के, कर में बांधे मंगलकार।
रक्षा करते भाई बहिन की, विशद करे उनका उपकार।। गुरुवर...।।6।।

सम्यक् आराधना की आरती

तर्ज–जिनवर के चरणों....

जय–जय जिनवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गाएँ।
सम्यक् आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥

जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन–2।।टेक।।
मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, सम्यक् दर्शन गाया।
अष्ट अंग पच्चिस दोषों से, विरहित जो बतलाया।।
उपशम क्षायिक और क्षयोपशम, भेद रूप कहलाए। सम्यक्...।।1।।
जीवाजीव का भेद बताने, वाला ज्ञान कहाए।
सम्यक् दर्शन पाने वाला, जीव ज्ञान यह पाए।।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय अरु, केवलज्ञान कहाए। सम्यक्...।।2।।
बारह व्रत ग्यारह प्रतिमाएँ, व्रत श्रावक का गाया।
तेरह भेद युक्त मुनियों का, चारित जिन बतलाया।।
सम्यक् चारित पाने वाले, मोक्ष मार्ग अपनाएँ। सम्यक्...।।3।।
बाह्य सुतप के भेद बताए, अनशनादि छह भाई।
अभ्यन्तर तप छह होते हैं, शुभ मुक्ती पद दाई।।
सम्यक् तपकर कर्म निर्जरा, हे जिन! हम भी पाएँ। सम्यक्...।।4।।
मोक्ष गये जो पूर्व काल में, सब ने यह अपनाये।
हम भी यही भावना लेकर, द्वार प्रभु अब आये।।
'विशद' ज्ञान पाकर के हम भी, शिव नगरी को जाएँ। सम्यक्...।।5।।

रत्नत्रय धर्म की आरती

तर्ज– जिनवर के चरणो.....

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा शुभकारी।
विशद भाव से करते हैं हम, आरति मंगलकारी।।
धर्म की पाएँ विशद शरण, धर्म की पाएँ विशद शरण।।टेक।।
हो मिथ्यात्व विनाश कषायें, अनंतानुबन्धी जावे।
सप्त तत्व में श्रद्धा हो तब, सम्यक्दर्शन पावे।।
उपशम क्षायिक और क्षयोपशम, तीन भेद बतलाए।
तीर्थंकर पद तब ही मिलता, दर्श विशुद्धी पाए।। धर्म की...।।1।।
सर्व चराचर द्रव्य तत्व का, जो है जानन हारा।
भेदज्ञान का साधन अनुपम, जग में एक सहारा।।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय शुभ, केवलज्ञान बताए।
सम्यक् दर्शन पाने वाला, ज्ञानी जीव कहाए।। धर्म की...।।2।।
हिंसादिक पाँचों पापों से, जो विरक्त हो जावे।
देश सर्व व्रत पाने वाला, चारित्री कहलावे।।
गुप्ति समीति धर्मानुप्रेक्षा, परिषह जय शुभ जानो।
संवर और निर्जरा तप से, होती है यह मानो।। धर्म की...।।3।।
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य शुभ गाया।
संयम तपस्त्याग आकिंचन, ब्रह्मचर्य बतलाया।।
दश धर्मों को धारण करके, निज सौभाग्य जगाए।
कर्मनाशकर अपने सारे, सिद्ध शिला को पाए।। धर्म की...।।4।।
मोक्ष मार्ग में सम्यक् दर्शन, नाविक है मनहारी।
सम्यक्ज्ञान कहा इस जग में, अनुपम विस्मयकारी।।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, चारित्र की बलिहारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त हो, अनुपम अतिशयकारी।। धर्म की...।।5।।

सम्यक् दर्शन की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल आरति कीजे...

सम्यक्दर्श की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक॥
प्रथम निशंकित अंग बताया, दूजा नि:कांक्षित शुभ गाया। सम्यक्...॥1॥
तीजा निर्विचित्सा गाया, चौथा उपगूहन कहलाया। सम्यक्...॥2॥
पञ्चम अमूढ़ दृष्टिशुभ जानो, स्थिति करण छठा पहिचानो। सम्यक्...॥3॥
सप्तम वात्सल्य अंग कहाए, मार्ग प्रभावना अष्टम पाए। सम्यक्...॥4॥
मैत्रीभाव हृदय में लाए, प्रमुदित हो गुणियों! को पाए। सम्यक्...॥5॥
दुखियों में करुणा बरसाए, विनय हीन में समता लाए। सम्यक्...॥6॥
हम अनायतन को परित्यागें, तीन मूढ़ता में ना लागें। सम्यक्...॥7॥
गुण सम्यक्त्व को हम प्रगटाएँ, 'विशद' हृदय सम्यक्त्व जगाएँ। सम्यक्..॥8॥
आरति करने को हम आए, दर्शन के सौभाग्य जगाए। सम्यक्...॥9॥

पंचमेरु की आरती

तर्ज- जिनवर के चरणों में....

पञ्च मेरु की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए अनुपम, जिनवर के दरबार॥
हो जिनवर हम सब उतारे तेरी आरती,
हो प्रभुवर हम सब उतारे तेरी आरती।टेक॥
प्रथम सुदर्शन मेरू में शुभ, चैत्यालय शुभकारी-2।
चार-चार हैं चतुर्दिशा में-2, अनुपम मंगलकारी॥ हो जिनवर...॥1॥
पूर्वधातकी खण्ड में मेरू, विजयनाम शुभ गाया-2।
लाख चौरासी योजन ऊँचा-2, आगम में बतलाया॥ हो जिनवर...॥2॥
अचल मेरू है खण्ड धातकी, पश्चिम में शुभकारी-2।
स्वर्ण कान्ति की आभा वाला-2, पूजें सब नर-नारी॥ हो जिनवर...॥3॥
पुष्कराद्धं पूरव में मेरू, मन्दर नाम बताया-2।
जिनबिम्बों से युक्त जिनालय-2, की है अनुपम माया॥ हो जिनवर...॥4॥
पश्चिम पुष्कराद्धं में मेरू, विद्युन्माली जानो-2।
रत्नमयी हैं 'विशद' जिनालय-2, धर्म के आलय मानो॥ हो जिनवर...॥5॥

महामन्त्र णवकार की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है....

महामन्त्र नवकार है, मुक्ति का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।टेक॥
महामंत्र के पञ्च पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है-2।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु गुण गाया है-2।महामन्त्र...॥1॥
मूलमंत्र अपराजित आदिक, मंत्रराज कई नाम रहे-2।
श्रेष्ठ अनादि निधन मंत्र के, और अनेकों नाम कहे-2।महामन्त्र...॥2॥
महामन्त्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं-2।
सुख शान्ती आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं-2।महामन्त्र...॥3॥
काल अनादी से जीवों ने, सद्श्रद्धान जगाया है-2।
महामन्त्र का ध्यान जाप कर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है-2॥ महामन्त्र...॥4॥
सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये-2।
अञ्जन हुए निरञ्जन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये-2॥ महामन्त्र...॥5॥
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामन्त्र को पाया है-2।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है-2॥ महामन्त्र...॥6॥
महामन्त्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं-2।
'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाएँ हैं-2॥ महामन्त्र...॥7॥

त्रैलोक्य जिनालय की आरती

तर्ज-दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक....

त्रैलोक्य जिनालय पावन है, जिनबिम्ब अकृत्रिम गाए हैं।
जिनके चरणों में भक्ती से, आरती करने हम आए हैं।टेक॥
है अधोलोक में सप्तकोटि अरु, लाख बहत्तर श्री जिनगृह।
जिनबिम्ब हो ऽऽऽ, जिन बिम्ब पूजते हम परोक्ष॥
यह द्रव्य संजोकर लाए है, त्रैलोक्य...॥1॥
शुभ मध्यलोक में चार शतक, अट्ठावन जिनगृह पावन हैं।
सुरनर हो ऽऽऽ, सुन्दर विद्याधर से पूजित॥
महिमाशाली बतलाए हैं, त्रैलोक्य...॥2॥
है ऊर्ध्व के जिनगृह चौरासी, लख सहस सतानवे तेइरस विशद।
जिनकी हो ऽऽऽ, जिनकी पूजा से कर्म गले॥
हम कर्म नशाने आए है, त्रैलोक्य...॥3॥
है लोक शिखर पर सिद्ध शिला, सिद्धों का जिसपे वास रहा।
जिनगृह हो ऽऽऽ, जिनगृह कृत्रिम भी रहे कई॥
हम पूजा करने आए है, त्रैलोक्य...॥4॥
हम भाव बनाकर हे स्वामी!, तव चरण शरण में आए हैं।
हम शीश हो ऽऽऽ, हम शीश झुकाते चरणों में॥
अब मुक्ती पाने आए है, त्रैलोक्य...॥5॥

विषापहार स्तोत्र विधान की आरती

तर्ज- करहुँ आरती आज.....

करहुँ आरती आज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे।
तुमरे द्वारे स्वामी तुमरे द्वारे-2॥
आदीश्वर महाराज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे।टेक॥
मानतुंग ने तुमको ध्याया, भक्तामर स्तोत्र रचाया।
बेड़ी टूटी ताले टूटे, बन्धन से मुनिवर जी छूटे॥
हुआ बड़ा चमत्कार, जिनेश्वर...॥1॥

जिन की भक्ति करने वाले, कवि धनञ्जय हुए निराले।
डसा नाग ने सुत को भाई, पत्नी तब मन में घबराई॥
गई प्रभु के द्वार, जिनेश्वर...॥2॥
सेठ ने गंधोदक छिड़काया, जहर सर्प का पूर्ण नशाया।
चमत्कार अतिशय दिखलाया, लोगों ने जयकार लगाया॥
हरसे तब नर-नार, जिनेश्वर...॥3॥
विषापहार स्तोत्र बनाया, भक्ती से प्रभु पद में गाया।
महिमाशाली जो बतलाया, पढ़ने वाले ने फल पाया॥
जग से अपरम्पार, जिनेश्वर...॥4॥
आरति करने को हम आये, दीप जलाकर के शुभ लाए।
'विशद' भावना मन में भाए, शिवपद हमको भी मिल जाए॥
वंदन बारम्बार, जिनेश्वर...॥5॥

पावापुर की आरती

तर्ज-इह विधि मंगल आरति कीजे....

पावापुर की आरति कीजे, नरभव स्वयं सफल कर लीजे।टेक॥
पावन सिद्ध तीर्थ यह भाई, महावीर ने मुक्ती पाई॥ पावा...॥1॥
त्रिशला नन्दन आप कहाए, युवा उम्र में दीक्षा पाए॥ पावा...॥2॥
तप में बारह वर्ष बिताए, तब प्रभु केवलज्ञान जगाए॥ पावा...॥3॥
समवशरण तब देव बनाए, ज्ञान कल्याणक विशद मनाए॥ पावा...॥4॥
तीस वर्ष तक किए विहारे, नगर-नगर में आप पधारे॥ पावा...॥5॥
दिव्य देशना आप सुनाए, जीवों ने प्रभु दर्शन पाए ।पावा...॥6॥
पावापुर में चलकर आए, योग निरोध प्रभु जी पाए॥ पावा...॥7॥
अपने सारे कर्म नशाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए॥ पावा...॥8॥
"विशद" भावना रही हमारी, मुक्ती हम पाएँ त्रिपुरारी॥ पावा...॥9॥

चम्पापुर सिद्धक्षेत्र की आरति

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

वासुपूज्य जिनराज हैं, चम्पापुर के ताज हैं।
चम्पापुर जी सिद्ध क्षेत्र की, आरति गाते आज हैं।।टेक।।
भरतक्षेत्र के आर्य खण्ड में, अंग देश शुभ गाया जी-2।
चम्पापुर में वासुपूज्य नृप, के गृह मंगल छाया जी-2॥ वासुपूज्य...।।1।।
फाल्गुण वदि चौदश को प्रभु जी, हुए जगत् अवतारी जी-2।
जन्म कल्याण मनाए सुरनर, जिनका मंगलकारी जी-2॥ वासुपूज्य...।।2।।
बाल ब्रह्मचारी होकर भी, मन वैराग्य जगाए जी-2।
चम्पा वन में केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए जी-2॥ वासुपूज्य...।।3।।
भादौ सुदि द्वितीया को स्वामी, केवलज्ञान जगाए जी-2।
समवशरण में दिव्य देशना, जग में आप सुनाए जी-2॥ वासुपूज्य...।।4।।
प्रभु मन्दार सुगिरि पे आके, अनुपम योग लगाए जी-2।
अष्टकर्म का नाश किए फिर, मुक्ति वधु को पाए जी-2॥ वासुपूज्य...।।5।।
पाँचों कल्याणक जिन स्वामी, चम्पापुर में पाए जी-2।
गर्भजन्म तप ज्ञान मोक्ष पा, नगरी धन्य बनाए जी-2॥ वासुपूज्य...।।6।।
'विशद' भाव से आरति करके, जिनवर के गुण गाते जी-2।
सिद्ध भूमि की पावन रज को, अपने माथ लगाते जी-2॥ वासुपूज्य...।।7।।

अष्टापद की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल.....

अष्टापद की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक।।
जो निर्वाण क्षेत्र कहलाए, आदिनाथ जी मुक्ती पाए। अष्टापद...।।1।।
इसी धरा से ज्ञान जगाए, दिव्य देशना आप सुनाए। अष्टापद...।।2।।
बाली महाबाली मुनि गाए, इसी क्षेत्र से मुक्ती पाए। अष्टापद...।।3।।
नाग कुमार आदि मुनि जानो, मोक्ष महापद पाए मानो। अष्टापद...।।4।।
शुभ त्रिकाल चौबीसी भाई, चक्री भरत ने जो बनवाई। अष्टापद...।।5।।
स्वर्ण मयी मंदिर बनवाए, रत्नमयी प्रतिमा पधराए। अष्टापद...।।6।।

रावण ने अहंकार दिखाया, बाली मुनि ने मान गलाया। अष्टापद...।।7।।
गिरि कैलाश शिखर शुभकारी, को वन्दन है विनत हमारी। अष्टापद...।।8।।
'विशद' भावना ये हम भाएँ, इसी शिखर से मुक्ती पाए। अष्टापद...।।9।।

राजगृही क्षेत्र की आरती

तर्ज-आज करे हम....

आज करें हम राजगृही की आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाये हैं हम, आज यहाँ शुभकार।।
हो भाई, हम सब उतारे मंगल आरती।।टेक।।
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, मगध देश शुभ गाया।
पञ्च शैलपुर अपर नाम शुभ, राजगृही कहलाया।। हो भाई...।।1।।
विपुलाचल पर महावीर जी, केवल ज्ञान जगाए।
दिव्य देशना भवि जीवों को, मंगलमयी सुनाए।। हो भाई...।।2।।
रत्नसुगिरि पर्वत शुभकारी, जिस पे जिन गृह गाए।
जिन प्रतिमाएँ चरण प्रभु के, जन-जन के मन भाए।। हो भाई...।।3।।
स्वर्णसुगिरि पर आदिनाथ की, प्रतिमा है मनहारी।
चरण पादुका भी है अनुपम, सबके संकटहारी।। हो भाई...।।4।।
है वैभार गिरि शुभकारी, जिनगृह जिस पे सोहें।
हैं जिन बिम्ब निराले जिसमें, जन जन का मन मोहे।। हो भाई...।।5।।
उदयसुगिरि पर तीन जिनालय, जिनके हम गुण गाते।
'विशद' भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।। हो भाई...।।6।।
सिद्ध भूमि जिनगृह प्रतिमाएँ, जग में पुण्य प्रदायी।
जिनकी अर्चा भाव सहित शुभ, करते हैं हम भाई।। हो भाई...।।7।।

रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जी की आरती

तर्ज- आओ बच्चो तुम्हें दिखाए....

जगमग-जगमग आरति कीजे, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनके द्वारा प्रगटित होती, ज्योति केवलज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2।।टेक।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाएँ जी।
स्वर्ग से आके देव प्रभु के, पञ्चकल्याण मनाएँ जी।।
इन्द्रराज सौधर्म स्वर्ग से, ऐरावत पर आए जी।
पाण्डुक शिला पे क्षीर नीर से, प्रभु का न्हवन कराए जी॥ वन्दे जिन...॥1॥
उत्तम संयम धारण कर प्रभु, केवल ज्ञान जगाए जी।
धन कुबेर इन्द्राज्ञा पाके, समवशरण बनवाए जी।।
अष्टकर्म को नाश प्रभू जी, निज स्वरूप प्रगटाए जी।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, प्रभू मोक्ष पद पाए जी॥ वन्दे जिन...॥2॥
व्रताराध्य रविव्रत के भाई, पार्श्व प्रभु कहलाए जी।
जिन की आरती करने को हम, 'विशद' यहाँ पर आए जी॥
मनोकामना पूरी होवे, यही भावना भाए जी।
कर्म काट कर शीघ्र यहाँ से, मोक्ष महापद पाएँ जी॥ वन्दे जिन...॥3॥

धर्मचक्र की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है....

समवशरण शुभकार है, अतिशय मंगलकार है।
धर्मचक्र की आरती करके, होती जय जयकार है।टेक॥
आत्म ध्यान करके तीर्थंकर, केवलज्ञान जगाते हैं।
कर्म घातिया के नशते हो, अनन्त चतुष्टय पाते हैं॥ समवशरण...॥1॥
धनकुबेर इन्द्राज्ञा पाकर, स्वर्ग लोक से आता है।
खुश होकर के श्री जिनेन्द्र का, समवशरण बनवाता है॥ समवशरण...॥2॥
अष्ट भूमियाँ समवशरण में, गंध कुटी अतिशयकारी।
आकर के सौधर्म इन्द्र भी, महिमा गावे मनहारी॥ समवशरण...॥3॥

प्रथम पीठ पर यक्षों के सिर, धर्मचक्र शोभा पावें।
चतुर्दिशा में अतिशयकारी, मानो जिन के गुण गावें॥ समवशरण...॥4॥
कमलाशन पर अधर प्रभु जी, दिव्य ध्वनि सुनाते हैं-2।
भव्य जीव सुनकर सद्दर्शन, सम्यक् चारित पाते हैं-2॥ समवशरण...॥5॥

सुख सम्पत्ति व्रत विधान की आरती

तर्ज-

ॐ जय अरहंत प्रभो! स्वामी जय अरहंत प्रभो!
आरति करें तुम्हारी, नाशो कष्ट विभो!॥
ॐ जय अरहंत प्रभो!॥टेक॥
सुख चिन्तामणि व्रत है पावन, इच्छित फलदाता-2।
करे भाव से जो भी प्राणी-2, पाए सुख साता॥ ॐ जय...॥1॥
यह विधान एकम से पूनम, तक करते भाई-2।
आकांक्षा से रहित जीव को-2, है शिव पद दाई॥ ॐ जय...॥2॥
पुण्य बढ़े व्रत करके भारी, आगम में गाया-2।
भाव सहित व्रत कर भव्यों ने-2, अक्षय फल पाया॥ ॐ जय...॥3॥
व्रत करके अरहंत प्रभू की, जाप करें भाई-2।
पाएगा ऐश्वर्य जीव यह-2, फैले प्रभुताई॥ ॐ जय...॥4॥
भक्ति भाव से नाथ आपके, चरणों हम आए-2।
'विशद' आरती करते-2, चरणों शिरनाये॥ ॐ जय...॥5॥

सुगन्ध दशमी पर्व की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है....

सिद्धों का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
कर्म दहन की आरति करता, भक्तों का परिवार है।।टेक।।
तत्वों पर श्रद्धा के धारी, सम्यक् दर्शन पाते हैं-2।
सम्यक् श्रद्धा पाके प्राणी, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं-2।
मोक्षमार्ग में सम्यक् चारित, गाया शुभ आधार है। कर्म...।।1।।
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, उत्तम संयम पाते हैं-2।
उत्तम तप को धारण करके, कर्म निर्जरा पाते हैं-2।
कर्मदहन कर सम्यक् तप से, हो जाते अविकार हैं। कर्म...।।2।।
शुक्लध्यान के द्वारा मुनिवर, क्षायिक श्रेणी पर चढ़ते-2।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, मुक्ती के पथ पर बढ़ते-2।।
कर्मदहन करने वाले प्रभु, जग में अपरम्पार हैं।। कर्म...।।3।।
कर्म दहन का भाव हृदय में, जो भी जीव जगाते हैं-2।
अग्नि कुण्ड में धूप दशांगी, सुरभित विशद जलाते हैं-2।।
श्री जिन की अर्चा करने से, हो जाता उद्धार है।। कर्म...।।4।।
देव-शास्त्र-गुरु भक्त सभी मिल, पावन पर्व मनाते हैं-2।
खेकर धूप सुगन्ध दशें को, मन में बहु हर्षाते हैं-2।।
'विशद' धर्म का पालन करना, नर जीवन का सार है।। कर्म...।।5।।

केवलज्ञान लक्ष्मी की आरती

तर्ज-हो बाबा हम सब.....

केवलज्ञान लक्ष्मी की हम, आरति करने आए।
घृत का दीप जलाकर हमने-2, हर्ष-हर्ष गुण गाए।।
हो माता, हम सब उतारे तेरी आरती-2।।टेक।।
चउ अनुयोग समाए हैं शुभ, तेरे ज्ञान में माता।
चार हाथ को पाने वाली-2, देने वाली साता।। हो माता...।।1।।
सरस्वती है साथ में तेरे, श्री जिनेन्द्र की वाणी-2।

श्रद्धा भक्ती से धारे जो, है उनकी कल्याणी।। हो माता...।।2।।
गणधर रहे पास में माँ के, जो मुनियों के स्वामी-2।
हे गणेश! तुम 'विशद' ज्ञान पा-2, बने मोक्ष पथ गामी।। हो माता...।।3।।
प्रातःवीर निर्वाण हुआ शुभ, संध्या गौतम स्वामी-2।
केवलज्ञान जगा करके जो-2, हो गये अन्तर्यामी।। हो माता...।।4।।
जिनकी अर्चा करने हम सब, दीपावली मनाते-2।
दीप जलाकर पूजा करके-2, भजनावलियाँ गाते।। हो माता...।।5।।

कुण्डलपुर के बड़े बाबा की आरती

तर्ज- आज करे हम...

आज करें हम बड़े बाबा की, आरति मंगलकारी-2।
घृत का दीप जलाकर जाए-2, बाबा तुमरे द्वार।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
नाभिराय मरुदेवि के नन्दन, आदिनाथ कहलाए-2।
नगर अयोध्या जन्म लिया प्रभु-2, मोक्षमार्ग अपनाए।। हो बाबा...।।1।।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, हैं आदीश्वर स्वामी-2।
षट्कर्मों के शिक्षा दाता-2, जिनवर अन्तर्यामी।। हो बाबा...।।2।।
धनुष पाँच सौ शुभ ऊँचाई, स्वर्ण वर्ण के धारी-2।
आयू लाख चुरासी पाये-2, तीर्थंकर अविकारी।। हो बाबा...।।3।।
बड़े बाबा की बड़ी मूर्ती, पावन है मनहारी-2।
वीतराग दर्शाने वाली-2, सुन्दर अतिशयकारी।। हो बाबा...।।4।।
प्रभु चरणों में 'विशद' भाव से, जो भी शीश झुकाते-2।
मनोकामना पूरी करके-2, इच्छित फल को पाते।। हो बाबा...।।5।।

सप्तऋषि की आरती

तर्ज- ईह विधि मंगल आरती कीजे...

सप्तऋषी की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक॥
श्रीमन्यू पहले ऋषि गाए, संयम धर के ऋद्धीपाए॥ सप्त...॥1॥
सुरमन्यू ऋषि द्वितिय कहाए, मुक्ती पथ को जो अपनाए॥ सप्त...॥2॥
निचय ऋषीश्वर तृतिय जानो, रत्नत्रय के धारी मानो॥ सप्त...॥3॥
सर्व सुन्दर ऋषि चौथे सोहें, भव्यों के मन को जो मोहें॥ सप्त...॥4॥
पञ्चम ऋषि जयवान कहाए, जो अपनी महिमा दिखलाए। सप्त...॥5॥
छठ्वे ऋषि विनय लालस भाई, जिनने पाई जग प्रभुताई। सप्त...॥6॥
सप्तम जय मित्र कहाए स्वामी, विशद मोक्ष पथ के पथगामी। सप्त...॥7॥
सप्त ऋषीयों की आरति गाते, पद मे सादर शीश झुकाते। सप्त...॥8॥

क्षायिक नव लब्धि विधान की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल....

लब्धीधर की आरति गाएँ, नर भव अपना सफल बनाएँ।टेक॥
दानलब्धी शुभ पाने वाले, केवलज्ञानी रहे निराले। लब्धी...॥1॥
लाभ लब्धि की महिमा न्यारी, होते अर्हत् पद के धारी। लब्धी...॥2॥
क्षायिक भोगलब्धि जो पावें, वे जिन केवलज्ञान जगावें। लब्धी...॥3॥
प्रभु उपभोग लब्धि शुभ पाते, वे जिन मोक्ष महल को जाते। लब्धी...॥4॥
वीर्य लब्धि जो मुनि प्रगटाते, केवलज्ञानी जिन कहलाते। लब्धी...॥5॥
शुभ सम्यक्त्व लब्धि शुभ गाई, जिनवर पाते हैं शिवदाई। लब्धी...॥6॥
चारित लब्धी पाके स्वामी, बनें मोक्ष पथ के अनुगामी। लब्धी...॥7॥
क्षायिकज्ञान लब्धि जिन पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए। लब्धी...॥8॥
क्षायिक दर्शन लब्धि जगाएँ, वे जिन मोक्षमहल को जाएँ। लब्धी...॥9॥
'विशद' भावना यही हमारी, बन जाएँ शिव के अधिकारी। लब्धी...॥10॥

दिव्य देशना की आरती

तर्ज- ॐ जय.....

ॐ जय जिनवर वाणी, श्री जय जिनवर वाणी।
भव्य जनों की है जो, पावन कल्याणी॥
ॐ जय जिनवर वाणी।टेक॥
दिव्य देशना ॐकार मय जिनवर की गाई-2।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, है मंगलदाई॥ ॐ जय...॥1॥
ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञान युक्त गाई-2।
द्रव्यभाव श्रुत पावन-2, जग में सुखदायी॥ ॐ जय...॥3॥
नाम भारती सरस्वती या, कहो शारदा माता-2।
जिनवाणी जग के जीवों को, देती है साता॥ ॐ जय...॥3॥
दिव्य देशना जग जीवों को, प्रभु ने दी भाई-2।
दर्शन ज्ञान चारित्र प्राप्त कर-2, मुक्ति श्री पाई॥ ॐ जय...॥4॥
दिव्य ध्वनि के कर्त्ता, श्री जिनवर गाए-2।
'विशद' आरती करने-2, आज यहाँ आए॥ ॐ जय...॥5॥

श्री भरतेश्वर स्वामी की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल आरती कीजे...

भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक॥
आदिनाथ के पुत्र कहाए, माता नन्दा के सुत गाए॥ भरते...॥1॥
नगर अयोध्या जन्म लिया हैं, वंश इक्ष्याकू धन्य किया है॥ भरते...॥2॥
चक्ररत्न तुमने प्रगटाया, प्रथम चक्रवर्ती पद पाया। भरते...॥3॥
छह खण्डों का वैभव पाए, किन्तु जग के भोग ना भाए। भरते...॥4॥
जल में कमल रहे ज्यों भाई, जीवन में यह वृत्ती पाई। भरते...॥5॥
राज त्याग कर संयम पाए, अन्तर्मुहूर्त्त में ज्ञान जगाए। भरते...॥6॥
अष्टापद से कर्म नशाए, परम मोक्ष पदवी जो पाए। भरते...॥7॥
'विशद' भावना हम ये भाएँ, कर्म नाशकर ज्ञान जगाएँ। भरते...॥8॥
अष्टमूलगुण हम प्रगटाएँ, अष्टापद से मुक्ती पाएँ। भरते...॥9॥

श्री सहस्त्रकूट की आरती

तर्ज- हम सब उतारे...

आज करें हम सहस्त्रकूट की, आरति मंगलकारी-2।
दीप जलाकर लाए घृत के-2, जिनवर के दरबार॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती-2।टेक॥
सहस्त्रनाम के धारी जिनवर, सहस्त्रगुणों को पाते-2।
एक हजार आठ गुणधारी-2, तीर्थंकर कहलाते॥ हो जिनवर...॥1॥
श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी-2।
सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर-2, पाते अतिशयकारी। हो जिनवर...॥2॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी-2।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन-2, होते मंगलकारी॥ हो जिनवर...॥3॥
सार्थक नाम प्राप्त करते है, तीर्थंकर अविकारी-2।
अनुक्रम से बन जाते हैं जो-2 शिवपद के अधिकारी॥ हो जिनवर...॥4॥
सहस्त्रकूट की पूजा अर्चा, करने को हम आए-2।
'विशद' जगे सौभाग्य हमारे-2, चरण शरण को पाए। हो जिनवर...॥5॥

त्रिकाल चौबीसी विद्यमान विंशति तीर्थंकर की आरती

तर्ज-ॐ जय.....

ॐ जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा-2।
त्रैकालिक जिनवर की करते-2, भाव सहित सेवा॥
ॐ जय जिनवर देवा।टेक॥
निर्वाणादिक भूतकाल के, चौबीस जिन गाए-2।
घृत के दीप जलाकर के हम-2, आरति को लाए॥ ॐ जय...॥1॥
वर्तमान के तीर्थंकर हैं, वृषभादिक भाई-2।
भरत क्षेत्र में फैल रही है-2, जिनकी प्रभुताई॥ ॐ जय...॥2॥
महापद्म आदिक भविष्य के, जिनवर अविकारी-2।
तीर्थंकर चौबिस कहलाए-2, जिन मंगलकारी॥ ॐ जय...॥3॥

विद्यमान जिन हैं विदेह के, जिनको हम ध्याते-2।
तीन योग से जिनके चरणों-2, हम भी शिरनाते॥ ॐ जय...॥4॥
तीन काल के तीर्थंकर की, पावन प्रतिमाएँ-2
विद्यमान तीर्थेश 'विशद' हैं-2, जिनमहिमा गाएँ॥ ॐ जय...॥5॥

महावीर स्वामी की आरती

ॐ जय महावीर प्रभो! स्वामी जय महावीर प्रभो!।
जिन मंदिर में आप विराजें-2, हे जिन वीर विभो!॥
ॐ जय महावीर प्रभो!॥टेक॥
आषाढ़ वदी षष्ठी को, गर्भ में प्रभु आए-2।
दिव्य रत्न तब देव खुशी से-2, आके वर्षाए॥ ॐ जय...॥1॥
कुण्डलपुर में जन्म लिये प्रभु, जन मन हर्षाए-2।
चैत शुक्ल तेरस को-2, अति मंगल छाए॥ ॐ जय...॥2॥
मंगशिर वदि दशमी को, प्रभु वैराग्य लिये-2।
राज-पाट-परिवार स्वजन से-2, नाता तोड़ दिए॥ ॐ जय...॥3॥
दशमी सुदि वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगा-2।
समवशरण तब राजगृही में-2, अतिशयकार लगा॥ ॐ जय...॥4॥
कार्तिक वदी अमावस को प्रभु, हुए मोक्षमागी-2।
देव इन्द्र पावापुर आकर-2, करते प्रणमामी॥ ॐ जय...॥5॥
"विशद" भाव से वीर प्रभू की, महिमा हम गाते-2
तीन योग से जिन चरणों में-2, हम सब सिरनाते॥ ॐ जय...॥6॥

श्री अरिहंत प्रभु की आरती

तर्ज-कंचन की थाली लाए....

कंचन की थाली लाए, रत्नों के दीप जलाए।
गोघृत से करते थारी आरती।।
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।टेक।।
चयकर के प्रभु स्वर्ग से आए, गर्भ कल्याणक पाएँ।
छह नौ माह देव भक्ती से, रत्न वृष्टि करवाएँ।।
हम सब जिन महिमा गाए, भक्ती से शीश झुकाएँ।
करते हैं भविजन थारी आरती, हो देवा...।।1।।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, ऐरावत सुर लाए।
पाण्डुक शिला पे न्वहन कराके, जय-जयकार लगाए।।
सचियाँ श्रृंगार कराए, भक्ती से नाचें गाए।
सब मिल उतारें थारी आरती, हो देवा...।।2।।
तप कल्याणक के अवसर पर, देव पालकी लाएँ।
बैठाकर के प्रभु को उसमें, दीक्षावन ले जाएँ।।
वस्त्र जो स्वयं उतारें, केश भी आप उखाड़े।
नचि-नचि के करते हैं थारी आरती, हो देवा...।।3।।
शुद्धोपयोग लगाकर प्रभु जी, घाती कर्म नशावें।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, केवलज्ञान जगावें।।
दिव्य ध्वनि आप सुनाएँ, तत्वों का सार बताएँ।
कहलाए जो जिन भारती, हो देवा...।।4।।
योग निरोध करें जिन स्वामी, आठों कर्म नशाएँ।
अष्ट गुणों को पाने वाले, मोक्ष महापद पाएँ।।
नख केश देव जलाएँ, भस्म को माथ लगाएँ।
सुस्वर से गाए पावन आरती, हो देवा...।।5।।
तीन लोक में पूज्य हुए हैं, तीर्थंकर पद धारी।
महावीर की महिमा गाते, इस जग के नर नारी।।
समकित का दीपक लाए, ज्ञान की ज्योति जलाए।
चारित की गाएँ 'विशद' आरती, हो देवा...।।6।।

सहस्त्रकूट की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल....

सहस्र कूट की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक।।
जिसमें सहस आठ प्रतिमाएँ, वीतरागता जो दशाएँ। सहस्त्र...।।1।।
सहस आठ लक्षण के धारी, जिनवर होते हैं अविकारी। सहस्त्र...।।2।।
साधू करें साधना भारी, तप होता है कर्म निवारी। सहस्त्र...।।3।।
तप कर पावन पुण्य कमाएँ, कर्म निर्जरा भी जो पाएँ। सहस्त्र...।।4।।
प्रभु अर्हत् पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ। सहस्त्र...।।5।।
स्थापित जिनबिम्ब कराएँ, जिनकी अर्चाकर हर्षाएँ। सहस्त्र...।।6।।
हम भी अतिशय पुण्य कमाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवी को पाएँ। सहस्त्र...।।7।।
कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ, मानव जीवन सफल बनाएँ। सहस्त्र...।।8।।

चारित्र शुद्धि व्रत की आरती

तर्ज- ॐ जय....

ॐ जय चारित्रधारी, स्वामी जय चारित्र धारी।
चारित शुद्धी पालें, मुनिवर अनगारी।। ॐ जय चारित्र धारी...।टेक।।
परम अहिंसा धारे, मुनिवर अविकारी-2।
सत्य महाव्रत पाते-2, गुरु मंगलकारी।। ॐ जय चारित्रधारी...।।1।।
व्रताचौर्य पाते हैं, ब्रह्मचर्य धारी-2।
अपरिग्रही होते हैं-2, मुनि संयमधारी।। ॐ जय चारित्रधारी...।।2।।
रात्री भुक्ती अणुव्रत, के हैं परिहारी-2।
कृत कारित अनुमोदन-2, त्यागें योगधारी।। ॐ जय चारित्रधारी...।।3।।
ईर्या समीति भी पाते-भाषा समितिधारी-2।
ऐषणा समिति भी पाले-2, एक भुक्तधारी।। ॐ जय चारित्रधारी...।।4।।
आदान निक्षेपण समिति, व्युत्सर्ग समितिधारी-2।
तीन गुप्ति का गोपन-2 करते शिवकारी।। ॐ जय चारित्रधारी...।।5।।
हम भी चारिधारी, मुनिवर को ध्याते-2।
चारित्र पाने हेतू-2, चरणों सिरनाते।। ॐ जय चारित्रधारी...।।6।।
'विशद' आरती करने, आज यहाँ आये-2।
घृत के दीपक अनुपम, हमने प्रजलाये।। ॐ जयचारित्रधारी...।।7।।

अनन्त व्रत की आरती

तर्ज- आज थारी आरती उतारूँ....

श्री अनन्तनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारू थारी, मूरत निहारू-2॥
कर दो विशद उद्धार, आज थारी आरती उतारूँ।टेक॥
श्यामा माता के सुत प्यारे-2, हरीषेण के राजदुलारे-2।
जन्मे अयोध्या धाम, आजथारी आरती उतारूँ॥ श्री अनन्त...॥1॥
पचास लाख पूरब की जानो-2, श्री जिनेन्द्र की आयु मानो-2।
सेही चिन्ह पहिचान, आज थारी आरती उतारूँ॥ श्री अनन्त...॥2॥
पचास धनुष ऊँचे कहलाए-2, स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए-2।
'विशद' ज्ञान के ताज, आज थारी आरती उतारूँ॥ श्री अनन्त...॥3॥
कार्तिक वदी एकम को स्वामी-2, गर्भ में आए अन्तर्यामी-2।
ज्येष्ठ वदी द्वादशि जन्म, आज थारी आरती उतारूँ॥ श्री अनन्त...॥4॥
जेठ वदी द्वादशी तप पाए-2, चैत अमावश ज्ञान जगाए-2
चैत अमावश मोक्ष, आज थारी आरती उतारूँ॥ श्री अनन्त...॥5॥
व्रतानन्त शुभ जो भी पावें-2, अपने वे सौभाग्य जगावे-2।
पावें शिवपुर राज, आज थारी आरती उतारूँ॥ श्री अनन्त...॥6॥

पंचकल्याणक की आरती

तर्ज-जिनवर के चरणो में नमन....

पञ्च कल्याणक की अनुपम शुभ, आरति मंगल गाते।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, विशद भावना भाते॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन-2।टेक॥
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, गर्भ कल्याणक पावें।
इन्द्र रत्नवृष्टी करके शुभ, मन में अति हर्षावें॥
स्वर्ग लोक में इन्द्र सभी मिल, गीत भक्ति के गाते॥ कल्याणक...॥1॥
जन्म कल्याणक के अवशर पर, इन्द्र ऐरावत लावे।
पाण्डु शिला पे क्षीर नीर से, अतिशय न्हवन करावे॥

दाएँ पग में चिन्ह देखकर, नामकरण कर पाते। कल्याणक...॥2॥
देख दशा संसार वास की, पूर्ण विरक्ती पावें।
पञ्च महाव्रत धारण करके, संयम भाव जगावें॥
पञ्च मुष्ठि से केशलुंच कर, जैन सुमुनि बन जाते॥ कल्याण...॥3॥
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान जगावें।
समवशरण की रचना करने, देव स्वर्ग से आवें॥
श्री जिनवर के समवशरण में, भव्य जीव जा पाते। कल्याणक...॥4॥
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, जग में मंगलकारी।
गणधर उसे झेलने वाले, होते हैं उपकारी॥
कर्म नाशकर केवलज्ञानी, 'विशद' मोक्ष को जाते। कल्याणक...॥5॥

आरती सोलहकारण पर्व की

तर्ज-आज मंगलवार है.....

जिनवर का दरबार है, आरति मंगलकार है।
सोलहकारण भव्य भावना, की शुभ जय-जयकार है।टेक॥
तीर्थंकर पद के कारण यह, सोलह भाव बताए हैं-2।
बने पूर्व में तीर्थंकर जो, सभी भावना भाए हैं-2॥ जिन...॥1॥
दर्श विशुद्धी प्रथम भावना, जो भी प्राणी भाते हैं-2।
शेष भावनाए भाने की, शक्ति वे ही पाते हैं-2॥ जिन...॥2॥
दर्श विशुद्धी पाने वाला, विनय गुणों को पाता है-2।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी होकर, शील सुव्रत अपनाता है-2॥ जिन...॥3॥
धारण कर संवेग शक्तिसः, तपस्त्याग शुभ पाते हैं-2।
साधु समाधी वैय्यावृत्ती, अर्हत महिमा गाते हैं-2॥ जिन...॥4॥
आचार्य बहुश्रुत प्रवचन भक्ति, आवश्यक अपरिहारी जी-2।
मार्ग प्रभावना प्रवचन वत्सल, तीर्थंकर अविकारी जी-2॥ जिन...॥5॥
सोलहकारण भव्य भावना, 'विशद' भाव से हम भाएँ-2।
कर्म नाशकर अपने सारे-2, तीर्थंकर पदवी पाएँ॥ जिन...॥6॥

विद्यमान विंशति तीर्थंकर की आरती

तर्ज- आज करे हम.....

आज करें हम तीर्थंकर की, आरति मंगलकारी-2।
विद्यमान जो हैं विदेह में-2, बीस कहे मनहारी।
हो जिनवर-हम सब उतारें तेरी आरती-2।टेक।।
सीमन्धर युगमन्धर स्वामी, बाहु सुबाहू गाये।
जम्बूद्वीप के जो विदेह में-2, अवस्थिति शुभ पाए।। हो जिन...।।1।।
सुजात स्वयंप्रभ वृषभानन जी, अनन्तवीर्य जिन स्वामी-2।
पूर्व धातकी खण्डद्वीप में, सोहें अन्तर्यामी।। हो जिन...।।2।।
प्रभू सूरप्रभ विशालकीर्ति जी, व्रजधर अरूचन्द्रानन-2।
पश्चिम विदेह में रहे अवस्थित-2, जिनके पद मम वन्दन है। हो जिन...।।3।।
भद्रबाहु जिन और भुजंगम, ईश्वर नेमीप्रभ हैं-2।
पुष्करार्ध पूरव में स्थित-2, तीर्थंकर यह सब हैं। हो जिन...।।4।।
वीरसेन महाभद्र देवयश, अजितवीर्य जिन गाये-2।
पुष्करार्ध पश्चिम में जिनपद-2, भविजन शीश झुकाए।। हो जिन...।।5।।
जिनबिम्बों का स्थापन कर, जिनकी आरति गाते-2।
'विशद' भाव से चरण कमल में-2, सादर शीश झुकाते।। हो जिन...।।6।।
श्री जिनेन्द्र की आरति गाके, यह सौभाग्य जगाएँ-2।
कर्म नाशकर अपने सारे-2, सिद्ध महापद पाएँ।। हो जिन...।।7।।

पंच पाण्डव की आरती

तर्ज-.....

आनंद अपार है, भक्ति का प्रसार है।
पाँचों पाण्डव की आरती कर, होती जय-जयकार है।टेक।।
मंगल आरती लेकर स्वामी, आये तुमने द्वार जी-2।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, पाने भवदधि पार जी-2।। आनन्द...।।1।।
भक्त सभी मिलकर के नाचें, आज तुम्हारे द्वार जी-2।
मुनि युधिष्ठिर भीमार्जुन की, बोलें जय-जयकार जी।। आनन्द...।।2।।

नकुल और सहदेव सुमुनि के, आज चरण को पाया जी-2
तुम हो मुक्ती पथ के राही, तव चरणों में आया जी-2।। आनन्द...।।3।।
नैय्या पार लगादो मेरी, चरण शरण शिरनाया जी-2।
अजर-अमर पद पाने हेतू, सुगुण आपका गाया जी-2।। आनन्द...।।4।।
शरण आपकी जो भी आते, मन वांछित फल पाते हैं-2।
'विशद' मोक्षफल पाने हम भी, सादर शीश झुकाते हैं-2।। आनन्द...।।5।।
पाँचों पाण्डव के गुण गाते, पञ्चम गति शुभ पाने को-2।
'विशद' भाव से भक्ती करते, अपने कर्म नशाने को-2।। आनन्द...।।6।।

जिनगुण सम्पत्ति व्रत की आरती

तर्ज- करहूँ आरती आज....

करहूँ आरती आज जिनेश्वर तुमरे द्वारे।
तुमरे द्वारे स्वामी तुमरे द्वारे।।
करहूँ आरती आज जिनेश्वर तुमरे द्वारे।टेक।।
धर्मतीर्थ के तुम हो कर्त्ता-2, मुक्तिवधू के हो तुम भर्त्ता-2।
मोक्ष महल के ताज, जिनेश्वर....।।1।।
सोलहकारण भावना भाए-2, पञ्चकल्याणक तुमने पाए-2।
तारण तरण जहाज, जिनेश्वर.....।।2।।
जन्म के अतिशय तुम दश पाये-2, केवलज्ञान के भी प्रगटाए-2।
तीर्थंकर भगवान, जिनेश्वर.....।।3।।
चौदह अतिशय देव दिखाते, चौंतिस अतिशय प्रभु तुम पाते-2।
प्रातिहार्य भी आठ, जिनेश्वर.....।।4।।
जिनगुण सम्पद के तुम स्वामी-2, त्रिभुवन पति हे अन्तर्यामी!-2।
गुण त्रेसठ के साथ, जिनेश्वर.....।।5।।
अनन्त चतुष्टय तुम प्रगटाते-2, अंतरंग लक्ष्मी को पाते-2।
'विशद' ज्ञान के नाथ!, जिनेश्वर.....।।6।।
जिनगुण संपद गुण के धारी-2, पूजा करते मंगलकारी-2।
पाते शिवपद राज, जिनेश्वर.....।।7।।

नव ग्रहारिष्ट निवारक तीर्थंकर की आरती

तर्ज- जिनवर के चरणों में नमन....

गाएँ जी गाएँ तीर्थंकर की, आरति मंगल गाएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन-2॥टेक॥
रवि अरिष्ट ग्रह शान्ती हेतू, पद्मप्रभु को ध्याएँ।
भक्ति भाव से दीप जलाकर, आरति मंगल गाएँ॥
चन्द्र अरिष्ट की शान्ती हेतू, चन्द्रप्रभु गुण गाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥ जिनवर...॥1॥
भौम अरिष्ट की शान्ति करने, वासुपूज्य को ध्याएँ।
चरण वन्दना करने हेतू, चम्पापुर को जाएँ॥
बुध अरिष्ट की शान्ती हेतू, वसु तीर्थंकर ध्याएँ।
नवग्रह शांती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥ जिनवर...॥2॥
गुरु अरिष्ट की शान्ती करने, वृषभादिक गुण गाएँ।
अष्ट गुणों की सिद्धि हेतू, अष्ट जिनेश्वर ध्याएँ॥
शुक्र अरिष्ट की शान्ती करने, पुष्पदन्त सिरनाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥ जिनवर...॥3॥
शान्ती होवे शनि अरिष्ट की, मुनिसुव्रत को ध्याएँ।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत होय मम्, नेमिनाथ गुण गाएँ॥
मुनिसुव्रत सुव्रत पाने की, 'विशद' भावना भाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥ जिनवर...॥4॥
केतू ग्रह हो शांत प्रभू हम, मल्लिपार्श्व जिन ध्याएँ।
चौबीसों तीर्थंकर जिन की, आरति कर हर्षाएँ॥
सुख शाता से जीवन जीकर, सिद्ध दशा को पाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥ जिनवर...॥5॥

ऋषि मण्डल की आरती

तर्ज- हो बाबा, हम सब उतारें.....

यन्त्र ऋषी मण्डल की करते, आरति मंगलकारी-2।
दीप जलाकर घृत के लाए-2, आज यहाँ शुभकार॥
हो भाई, हम सब उतारें मंगल आरती॥
गोलाकार के मध्य विराजे, ह्रीं कार मनहार।
चौबिस तीर्थंकर से शोभित-2, होता अपरम्पार॥ हो भाई...॥1॥
ऋषि मण्डल स्तोत्र जाप से, मनवांछित फल पाए-2।
शाकिन-डाकिन भूत-प्रेत की-2, बाधा नहीं सताए॥ हो भाई...॥2॥
रोग-शोक सर्पादिक का विष, क्षण में होय विनाश-2।
निर्धन मन वांछित धन पावें-2, होवे पुरी आस॥ हो भाई...॥3॥
पुत्र हीन सुत पावें वांछित, गृह का मिटे क्लेश-2।
खोये स्वजन वस्तु को पायें-2, शान्ति पायें विशेष॥ हो भाई...॥4॥
हर्षित मन से करें आरती, पावें पुण्य अशेष।
अनुक्रम से मुक्तीपद पावें-2, जावें स्वयं स्वदेश॥ हो भाई...॥5॥
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवें कर्म विनाश।
यह संसार असार छोड़कर-2, पाएँ शिवपुर वास॥ हो भाई...॥6॥

गणधर वलय की आरती

तर्ज-.....

गणधर जी अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं।
चौबिस जिन के गणधर की हम, करते जय-जयकार हैं।टेक॥
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, अनन्त चतुष्टय पाते जी-2।
स्वर्गलोक के देव सभी मिल, समवशरण बनवाते जी-2॥ गणधर....॥1॥
दिव्य देशना देकर जिनवर, भव्यों का तम हरते हैं-2।
चार ज्ञान के धारी गणधर, वाणी झेला करते हैं-2॥ गणधर...॥2॥
नर तिर्यंच अरु देव सभी मिल, समवशरण में आते हैं-2।
अपनी-अपनी भाषा में गुरु, अलग-अलग समझाते हैं-2॥ गणधर....॥3॥

दीक्षाधारण करते ही मुनि, चार ज्ञान प्रगटाते हैं-2।
मति श्रुति अवधि मनःपर्यय शुभ, चार ज्ञान यह पाते हैं-2॥ गणधर...॥4॥
विशद साधना करने वाले, आतम ज्ञान जगाते हैं-2।
बुद्धि विक्रिया चारण आदिक, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं-2। गणधर...॥5॥

ॐ में विराजित पंच परमेष्ठी की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

पावन श्री ॐकार है, शाश्वत अतिशयकार है।
परमेष्ठी वाचक की गाते, आरति मंगलकार है।टेक॥
परमेष्ठी अरिहन्त हमारे, कर्म घातिया नाशी जी-2।
दिव्य देशना देने वाले, केवलज्ञान प्रकाशी जी-2॥ पावन...॥1॥
नित्य निरंजन अविनाशी श्री, सिद्ध प्रभू कहलाए हैं-2।
काल अनादी सिद्धशिला पर, सुखानन्त प्रगटाए हैं-2॥ पावन...॥2॥
पञ्चाचार का पालन करते, छत्तिस गुण के धारी जी-2।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, पावन मंगलकारी जी-2॥ पावन...॥3॥
उपाध्याय निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, पढ़ते और पढ़ाते हैं-2।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह का, जो श्रुत ज्ञान जगाते हैं-2॥ पावन...॥4॥
विषयाशा आरम्भ के त्यागी, रत्नत्रय गुणधारी जी-2।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, 'विशद' कहे अनगारी जी-2॥ पावन...॥5॥

ह्रीं में विराजित चौबीस तीर्थंकर की आरती

तर्ज- वन्दे जिनवरम, वन्दे जिनवरम.....

जगमग-जगमग आरति कीजे, चौबीसों भगवान की।
ह्रीं के अन्दर शोभा पाते, अतिशय आभावान की॥
वन्दे जिनवरम-वन्दे जिनवरम-2।टेक॥
पद्म प्रभु अरु वासुपूज्य जी, लाल रंग के कहलाए।
सीधी रेखा में द्वय जिनवर, के हमने दर्शन पाए॥
आरति करते आज यहाँ पर, श्री जिन अतिशयवान की। जगमग...॥1॥

श्री सुपार्श्व अरु पार्श्व नाथ जी, ई (ी) में शोभा पाते हैं।
हरित वर्ण के द्वय तीर्थंकर, जग में पूजे जाते हैं॥
आरति करने आए हैं हम, वीतराग विज्ञान की। जगमग...॥2॥
अर्धचन्द्र (ँ) में चन्द्र प्रभु अरु, पुष्पदन्त जी बतलाए।
धवलवर्ण है देह का जिनकी, अतिशय महिमा दिखलाए॥
आरति करते हैं हम दोनों, अतिशय महिमावान की॥ जगमग...॥3॥
मुनिसुव्रत अरु नेमिनाथ जी, श्याम बिन्दु (.) में गाए हैं।
मुक्ती पथ के राही जग को, प्रभु सन्मार्ग दिखाए हैं॥
आरति करते आज यहाँ हम, अतिशय कृपा निधान की॥ जगमग...॥4॥
'ह्र' के अन्दर सोलह जिनवर, पीतवर्ण के धारी हैं।
छियालिस मूलगुणों को पाते, पूर्ण रूप अविकारी हैं॥
'विशद' आरती करते हैं हम, वीतराग विज्ञान की। जगमग...॥5॥

मृत्युंजय विधान की आरती

तर्ज- .....

मृत्युञ्जय की करते हैं हम, आरति मंगलकारी-2।
दीप जलाकर घी के लाए-2, जिनवर के दरबार।
हो जिनवर, हम सब उतारे तेरी आरती-2।टेक॥
मृत्यु को जीता है तुमने, सारे कर्म विनाशे-2।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया-2, आतम ज्ञान प्रकाशे॥ हो जिनवर...॥1॥
तुम्हे पूजने वाले अपने, सारे रोग नशावें-2।
आकस्मिक बाधाएँ कोई-2, कभी पास न आवें॥ हो जिनवर...॥2॥
भूत प्रेत व्यन्तर की बाधा, भक्तों से भय खावें-2।
तंत्र टोटका की बाधा भी-2, पास नहीं आ पावें॥ हो जिनवर...॥3॥
मृत्युंजय की पूजा करके, मृत्युंजय को पावें-2।
करते आरति भक्तिभाव से-2, निज के गुण प्रगटावें॥ हो जिनवर।।4॥
विमल गुणों में अवगाहन कर, भरत क्षेत्र में आवें-2।
राग त्याग पाके 'विराग' फिर-2, 'विशद' गुणों को पावें॥ हो जिनवर...॥5॥

यागमण्डल विधान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

श्री जिनवर अविकार हैं, अतिशय मंगलकार है।
यागमण्डल की आरति कर हम, करते जय-जयकार हैं।टेक॥
परमेष्ठी हैं पाँच हमारे, जग में अतिशयकारी जी-2।
मंगल उत्तम शरण चार हैं, इनकी महिमा न्यारी जी-2॥ श्री जिन...॥1॥
भूत भविष्यत-वर्तमान के, चौबिस जिनवर जानो जी-2।
इनकी महिमा सर्वलोक में, सर्वश्रेष्ठ पहिचानो जी-2॥ श्री जिन...॥2॥
पंच विदेहों के विदेह उप, एक सौ आठ कहाए जी-2।
विद्यमान तीर्थंकर उनमें, बीस जिनेश्वर गाए जी-2॥ श्री जिन...॥3॥
पंचाचार का पालन करते, जिन दीक्षा के दाता जी-2।
उपाध्याय उपदेशक होते, सबके भाग्य विधाता जी-2॥ श्री जिन...॥4॥
'विशद' साधु रत्नत्रयधारी, तप से ऋद्धी पाते जी-2।
जैनधर्म आगम चैत्यालय, जिन प्रतिमा को ध्याते जी-2॥ श्री जिन...॥5॥

जति जी के चरण कमल की आरती

तर्ज- आज करे हम....

श्री जति जी के चरण कमल की, आरति मंगलकारी।
रोग शोक संताप निवारक-2, पावन अतिशयकारी॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती-2।टेक॥
क्षेत्र नजफगढ़ में जति जी ने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन दुखी जो दर पे आए-2, उनके कष्ट मिटाए॥ हो बाबा...॥1॥
दूर-दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आरती करके दर पे-2, मन वान्छित फल पाते॥ हो बाबा...॥2॥
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने "विशद" भाव से-2, दीप चलाकर लाए॥ हो बाबा...॥3॥
हमने सुना है सद् भक्तो के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी॥ हो बाबा...॥4॥

श्री पार्श्वप्रभु की आरती

तर्ज- हम सब उतारे...

आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभू हैं-2, सबके संकटहारी॥
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती।टेक॥
काशी नगरी जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए-2।
अश्वसेन माँ वामा देवी-2, के जो लाल कहाए॥ हो बाबा...॥1॥
जलते नाग नागिनी को प्रभु, पावन मंत्र सुनाए-2।
महामंत्र की महिमा से जो-2, देवसुगति उपजाए॥ हो बाबा...॥2॥
तीस वर्ष की भरी जवानी, मे प्रभु दीक्षा धारे-2।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ-2, चारित आप सम्हारे॥ हो बाबा...॥3॥
कई उपसर्ग सहनकर के भी, निज का ध्यान लगाए-2।
हार मानकर के शत्रू भी-2, चरणों में झुक जाए॥ हो बाबा...॥4॥
गिरि सम्मेद शिखर पे प्रभु जी, अतिशय ध्यान लगाए-2।
स्वर्ण भद्र शुभ कूँट से मुक्ती-2, पार्श्व प्रभु जी पाए॥ हो बाबा...॥5॥
जिन मंदिर में नर-नारी सब, नित प्रति शीश झुकाएँ-2।
"विशद" आरती करके प्रभु की-2, मन वांछित फल पाए॥ हो बाबा...॥6॥

"चाँदनपुर महावीर स्वामी की आरती"

ॐ जय महावीर स्वामी, जय महावीर स्वामी।
शासन नायक इस युग के तुम-2, हुए मोक्ष गामी॥
ॐ जय महावीर स्वामी।टेक॥
त्रिशला माँ सिद्धारथ के सुत, कुण्डलपुर वासी।
स्वामी कुण्डलपुर वासी॥
बाल ब्रह्मचारी हे स्वामी-2, अष्ट कर्म नाशी।
ॐ जय महावीर स्वामी॥1॥
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर स्वामी।
स्वामी महावीर स्वामी॥

पद्म सरोवर पावापुर से-2, हुए मोक्ष गामी।
ॐ जय महावीर स्वामी।।2।।
चमत्कार प्रभु चाँदनपुर में, आपहि दिखलाए।
स्वामी आप ही दिखलाए।।
गौ ने दूध झराया-2, भू से प्रगटाए।
ॐ जय महावीर स्वामी।।3।।
तीन शिखर युत स्वर्ण वेदी में, प्रभु शोभा पाएँ।
स्वामी प्रभु शोभा पाएँ।।
आदिनाथ और पुष्पदन्त भी-2, सबके मन भाएँ।
ॐ जय महावीर स्वामी।।4।।
दूर-दूर से यात्री आकर, तव दर्शन पाते।
स्वामी तव दर्शन पाते।।
'विशद' भाव से आरति-2, करके हर्षाते।
ॐ जय महावीर स्वामी।।5।।
ॐ जय महावीर स्वामी, जय महावीर स्वामी।
शासन नायक इस युग के तुम-2, हुए मोक्ष गामी।।
ॐ जय महावीर स्वामी।।टेक।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा।
इन्द्र शरण में आके-2, करते तव सेवा।।
ॐ जय पारस देवा।।टेक।।
काशी नगरी जन्म लिए प्रभु, जन-मन हर्षाए।
स्वामी जन-मन हर्षाए।।
पाण्डुक शिला पे देव इन्द्र सौ-2, न्हवन करवाएँ।
ॐ जय पारस देवा।।1।।
महामन्त्र शुभ नाग-नागनी, को प्रभु आप दिए-2।

पुण्य उदय से देव सुगति में-2, जो अवतार लिए।।
ॐ जय पारस देवा।।2।।
केवलज्ञान जगाया तुमने, घाती कर्म क्षये-2।
गिरि सम्मेद शिखर पे जाके-2, शिवपुर आप गये।।
ॐ जय पारस देवा।।3।।
जिन मंदिर में पार्श्व प्रभू की, प्रतिमा मनहारी-2।
आरती करके प्रभू आपकी-2, खुश हो नर-नारी।।
ॐ जय पारस देवा।।4।।
पार्श्व प्रभु के दर्शन करने, नित प्रति हम आते-2।
जिन दर्शन से निज दर्शन हों-2, भावना यह भाते।।
ॐ जय पारस देवा।।5।।

श्री मुनिसुव्रत जी की आरती

हे मुनिसुव्रत भगवान, करो कल्याण।
शरण हम आए, प्रभु चरणों शीश झुकाए।।टेक।।
तुम राजगृही में, जन्म लिया।
माँ पद्मावति को, धन्य किया।।
तुम पाए पञ्चकल्याण, शरण हम आए।
प्रभु चरणों शीश झुकाए।।1।।
शनि ग्रह ने, जिन्हें सताया है।
उनने प्रभु, तुमको ध्याया है।।
हो जाए पूर्ण निदान, शरण हम आए।
प्रभु चरणों शीश झुकाए।।2।।
जो भाव सहित, गुण गाते हैं।
वे इच्छित, फल को पाते हैं।।

जो हृदय धार श्रद्धान, शरण हम आए।
प्रभु चरणों शीश झुकाए।।3।।
हम पावन दीप, जलाए हैं।
प्रभु आरति करने, आए है।।
अब करो प्रभु कल्याण, शरण हम आए।
प्रभु चरणों शीश झुकाए।।4।।
हे मुनिसुव्रत, अन्तर्यामी।
हम 'विशद' करे, पद प्रणमामी।।
हे जिनशासन! की शान, शरण हम आए।
प्रभु चरणों शीश झुकाए।।5।।

गुरुदेव श्री विशद सागर जी की आरती

तर्ज- ॐ जय....

ॐ जय-जय गुरुदेवा, स्वामी जय-जय, गुरुदेवा।
आरति करत तुम्हारी, वन्दन करत तुम्हारी।।
मिले मुक्ति मेवा, ॐ जय-जय गुरुदेवा।।टेक।।
विशद सिन्धु गुरुदेव हमारे, बड़े आत्मध्यानी।
स्वामी बड़े आत्मध्यानी।।
उपदेशामृत देकर-2, कहते जिनवाणी।
ॐ जय-जय गुरुदेव।।1।।
धन्य-धन्य वे मात-पिताजी, परम भाग्यशाली।
स्वामी परम भाग्यशाली।।
ऐसे सुत को जन्मा-2, जो जन हितकारी।
ॐ जय-जय गुरुदेवा।।2।।
नग्न दिगम्बरभेष धारकर, बन गये उपकारी।

स्वामी बन गये उपकारी।।
पिच्छी कमण्डल सहित आपकी-2, मूरत अति प्यारी।
ॐ जय-जय गुरुदेवा।।3।।
भक्ति भाव से करें आरती, सब मिल नर-नारी।
स्वामी सब मिल नर-नारी।।
आया मैं भी शरण तुम्हारी-2, उद्धार करो स्वामी।
ॐ जय-जय गुरुदेवा।।4।।
'विशाल' दर्श जो करें आपके, बने आत्मज्ञानी।
स्वामी बने आत्म ज्ञानी।।
संयम पूर्वक करें निर्जरा-2, बने मोक्षगामी।
ॐ जय-जय गुरुदेवा।।5।।

श्री सीमन्धर स्वामी की आरती

तर्ज-जिनवर के चरणों में नमन....

आज करें हम दीप जलाकर, आरति मंगलकारी-2।
सीमंधर जिनराज कहाते-2, तीर्थंकर अविकारी।।
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती-2।।टेक।।
स्वर्गलोक से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
धन कुबेर ने खुश होकर के-2, दिव्य रत्न वर्षाए।।
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।1।।
ऐरावत ला जन्मोत्सव पर, इन्द्र स्वयं ही आए-2।
सहस्राष्ट कलशो के द्वारा-2, मेरु पे न्हवन कराए।।
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।2।।
यह संसार असार जानकर, प्रभु जी संयम पाएँ-2।
तेरह विध चारित के धारी-2, आतम ध्यान लगाएँ।।

हो, देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।3।।
कर्म घातियाँ नाश प्रभू जी, केवलज्ञान जगाते-2।
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर शुभ-2, समवशरण बनवाते।।
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।4।।
योग रोधकर श्री जिनवर जी, अपने कर्म नशाएँ-2।
ज्ञान शरीरी शुभ अविकारी-2, 'विशद' सिद्ध पद पाएँ।।
हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।5।।

श्री आदिनाथ जी के चरण कमल की आरती

तर्ज- आज करें हम....

आदिनाथ जी के चरण कमल की आरती मंगलकारी-2।
रोग-शोक संताप निवारक-2, पावन अतिशयकारी।टेक।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती-2।टेक।।
अष्टापद में आदि प्रभू ने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन दुखी जो दरपे आए-2, उनके कष्ट मिटाए।टेक।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।1।।
दूर-दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आरती करके दर पे-2, मन वाञ्छित फल पाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।2।।
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने 'विशद' भाव से-2, दीप जलाकर लाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।3।।
हमने सुना है सद् भक्तो के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।4।।

श्री चन्द्रप्रभु जी की आरती

तर्ज- आज करें हम....

आज करें हम विशद भाव से, आरति मंगलकारी-2।
चन्द्रप्रभु जिनराज विराजे-2, जग जन के हितकारी।।
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती।।टेक।।
मात लक्ष्मणा महासेन गृह, चयकर के प्रभु आए-2।
सिंहपुरी नगरी में पावन-2, अतिशय मंगल छाए।। हो बाबा...।।1।।
स्वर्ग लोक से देवों ने आ, दिव्य रत्नवर्षाए-2।
वैजयन्त से चयकर के प्रभु-2, गर्भागम शुभ पाए।। हो बाबा...।।2।।
इन्द्रराज शुभ मेरु सुगिरि पे, प्रभु का न्हवन कराते-2।
नमस्कार करके चरणों में-2, जय-जयकार लगाते।। हो बाबा...।।3।।
यह संसार असार जानकर, सत् संयम अपनाए-2।
कर्म घातिया नाशी जिनवर-2, 'विशदज्ञान' शुभ पाए।। हो बाबा...।।4।।
दिव्य देशना पाके प्रभु की, जग जन मन हर्षाए।
ललित कूट सम्मेद शिखर से-2, शिव पदवी शुभ पाए।। हो बाबा...।।5।।

श्री अरहनाथ जी की आरती

तर्ज-.....

अजब ज्योति जिनवर की।
देखो भाई, अजब ज्योति जिन अर की।।
जगमग ज्योति जलाए घृत की।
भीड़ लगी सुर-नर की।।
देखो भाई, अजब ज्योति जिनवर की।।1।।

स्वर्ग से चयकर प्रभु जी आए, गर्भ कल्याणक देव मनाए।
भक्ति भाव से मंगल गाए, वृष्टी किए रत्नन की।।
देखो भाई....।।1।।

जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया, इन्द्रराज ऐरावत लाया।
मेरु सुगिर अभिषेक कराया, महिमा अजब न्हवन की।।
देखो भाई....।।2।।

प्रभु मन में वैराग्य जगाए, केशलुंच कर संयम पाए।
निज आतम का ध्यान लगाए, भटकन मिटे दर दर की।।
देखो भाई....।।3।।

कर्म घातिया आप नशाते, अनन्त चतुष्टय पावन पाते।
दिव्य देशना आप सुनाते, वाणी तीर्थंकर की।।
देखो भाई....।।4।।

प्रभुजी सारे कर्म नशावें, मोक्ष महापदवी को पावें।
महिमा जिसकी को कह पावें, नींव धरे शिव धर की।।
देखो भाई....।।5।।

भव्य जीव जिन चरणों आवें, 'विशद' भाव से शीश झुकावें।
प्रभु के पद में आरती लावें, विनय सुनो अनुचर की।।
देखो भाई....।।6।।

चारित शुद्धि विधान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है....

चारित शुद्धि विधान है, शिवपद का सोपान है।
आरति करके जग के प्राणी, पाते पद निर्वाण है।।टेक।।
हेम वरण नृप उज्जैनी के, शिव सुन्दरी महारानी जी-2।
वन विहार में समता धारी, ऋषिवर पाए ज्ञानी जी-2।।
चारित शुद्धि....।।1।।

गुरु चरणों में नृप दम्पत्ती, व्रत पाने के भाव किए-2।
चारित शुद्धी व्रत करने का, श्री मुनिवर उपदेश दिए-2।।
चारित शुद्धि....।।2।।

बारह सौ चौंतिस व्रत करके, अतिशय पुण्य कमाएँ जी-2।
जिसके फल से तीर्थंकर पद, पाकर के शिव जाएँ जी-2।।
चारित शुद्धि....।।3।।

विधिवत व्रत कर नृप दम्पत्ति, मरण समाधी पाई जी-2।
अच्युतेन्द्र दिवि भूप सोलवे, में रानी उपजाई जी-2।।
चारित शुद्धि....।।4।।

चन्द्रभान तीर्थंकर होके, नृप विदेह से मोक्ष गये-2।
रानी 'विशद' होय तीर्थंकर, मोक्ष अनागत में जाए-2।।
चारित शुद्धि....।।5।।

अष्टापद के बड़े बाबा श्री आदिनाथ जी की आरती

करूँ आरती बड़े बाबा, श्री आदिनाथ जिन स्वामी की।
अष्टापद पे आप विराजे, तीर्थंकर शिवगामी की।।टेक।।
तृतिय काल के अन्त में प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
मात पिता भू स्वजन परिजन, को प्रभुवर ने धन्य किया।।
शीश झुकाते जिनके चरणों, सिद्धों के अनुगामी की। करूँ...।।1।।
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, जग-जन का कल्याण किया।
संयम धारण करके प्रभु ने, निज आतम का ध्यान किया।।
भाव सहित सब अर्चा करते, आज यहाँ शिवधामी की। करूँ...।।2।।
ज्ञान ध्यान तप करके प्रभु जी, कर्म घातियाँ नाश किए।
स्वाभाविक गुण रहा स्वयं का, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
जयकारा सब बोल रहे हैं, श्री जिन अन्तर्यामी की। करूँ...।।3।।
ॐकारमय दिव्य देशना, देकर धर्म प्रकाश किया।
भवि जीवों में फैल रहा जो, मोह महातम नाश किया।।
अष्टापद से शिवपद पाए, जय हो सिद्ध अकामी की। करूँ...।।4।।
जिन प्रतिमा श्री आदिनाथ की, पावन शुभ अविकारी है।
वीतराग दर्शाने वाली, अतिशय मंगलकारी है।।
'विशद' आरती करते हैं हम, जिन प्रतिमा अभिरामी की।। करूँ...।।5।।

श्री मुनिसुव्रत जी की आरती

ॐ जय मुनिसुव्रत देवा, स्वामी मुनिसुव्रत देवा।
करूँ आरति चरणों-2, पाऊँ पद सेवा।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा।।टेक।।

द्वितिया कृष्ण माह श्रावण में, गर्भागम पाए-2।
प्राणत स्वर्ग से चयकर-2, राजगृही आए।। ॐ जय...।।1।।
पिता सुमित्र माँ पद्मावति जी, के सुत कहलाए-2।
वदि वैशाख कृष्ण दशमी को-2, जन्म प्रभू पाए।। ॐ जय...।।2।।
श्याम रंग तन का प्रभु पाए, कछुआ चिन्ह धारी-2।
बीस धनुष ऊँचाई तन की-2, जग मंगलकारी।। ॐ जय...।।3।।
तीस हजार वर्ष की आयू, जाति स्मृति पाए-2।
वदि वैशाख दशें को प्रभु जी-2, संयम अपनाए।। ॐ जय...।।4।।
अपराजित शुभ देव पालकी, लेकर के आए-2।
एक हजार भूप दीक्षा सह-2, जिनवर के पाए।। ॐ जय...।।5।।
ऋषभ दत्त राजा के गृह में, प्रभु आहार किए-2।
तिथि वैशाख कृष्ण नौमी को-2, केवलज्ञान लिए।। ॐ जय...।।6।।
निर्जर कूटँ सम्मेद शिखर पे, प्रभु चलकर आए-2।
फाल्गुण वदि बारस को-2, 'विशद' मोक्ष पाए।। ॐ जय...।।7।।
महिमा प्रभु की अगम अगोचर, जो भी जन ध्याते-2।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य चरण में-2, आकर के पाते।।ॐ जय...।।8।।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज-सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा....।।टेक।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा-जिन शीश...।।1।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा-जिन शीश...।।2।।

गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
हैं अकृत्रिम ना निर्मित किसी के द्वारा-जिन शीश...॥3॥
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा-जिन शीश...॥4॥
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा-जिन शीश...॥5॥
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा-जिन शीश...॥6॥
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा-जिन शीश...॥7॥
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा-जिन शीश...॥8॥

बड़े गाँव के श्री पार्श्व प्रभु की आरती

आज करे हम बड़े गाँव में, आरति मंगलकारी-2।
बड़े गाँव के बड़े बाबा है-2, जग जन के दुखहारी॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥टेक॥
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धन्य बनाए॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥1॥
जन्मोसत्व पर मेरू गिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय-जयकार लगाए॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥2॥
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाएँ-2।

ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥3॥
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण भद्र शुभ, कूँट से मुक्ती पाएँ-2।
बड़े गाँव में पार्श्व प्रभु जी-2, भूमी से प्रगटाएँ॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥4॥
जो भी शरण आपकी आए, मनवांछित फल पाएँ-2।
'विशद' आरती पूजा करके-2, जीवन सफल बनाएँ॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥5॥
आज करें हम बड़े गाँव में, आरति मंगलकारी-2।
बड़े गाँव के बड़े बाबा है-2, जग-जन के दुखहारी॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती॥टेक॥

भूगर्भ से प्रगटित श्री पार्श्व प्रभु के चरणों की आरती

तर्ज- जिनवर के चरणों में नमन....

पार्श्व प्रभु के चरणों की हम, आरति करने आए।
जिन चरणों की अर्चा करने, दीप जलाकर लाए॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन-2॥टेक॥
काशी नगरी जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
अश्वसेन माँ वामा देवी, के जो लाल कहाए॥
जलते नाग-नागिन को प्रभु, पावन मंत्र सुनाए।
महामंत्र की महिमा से जो, देव सुगति उपजाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर...॥1॥
तीस वर्ष की भरी जवानी, में प्रभु दीक्षा धारे।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, चारित आप सम्हारे॥
कई उपसर्ग सहनकर के भी, निज का ध्यान लगाए।
हार मानकर के शत्रू भी, चरणों प्रभु के आए॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर....॥2॥
गिरि सम्मेद शिखर पे प्रभु जी, अतिशय ध्यान लगाए।
स्वर्ण भद्र शुभ कूँट से मुक्ती, पार्श्व प्रभू जी पाएँ॥
टीले से प्रभु प्रकट हुए है, बड़े गाँव में भाई।
श्वेत वर्ण की पावन प्रतिमा, सबको है फलदाई॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर...॥3॥
फागुन सुदि आठें उन्निस सौ, बाईस को शुभकारी।
प्रकट हुए प्रभु वहाँ चरण शुभ, शोभित हैं मनहारी॥
दूर-दूर से यात्री आकर, चरणों ढोक लगाएँ।
'विशद' आरती करके प्रभु की, मनवांछित फल पाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर....॥4॥

पार्श्व प्रभु के चरणों का अर्घ्य

प्रकट हुए श्री पार्श्वनाथ जी, फाल्गुन सुदी अष्टमी जान।
धवल रंग में शोभा पाते, अतिशयकारी महति महान॥
चरण शोभते उसी जगह पर, जिनकी महिमा अपरम्पार।
'विशद' भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार॥

ॐ ह्रीं बड़ा गाँव भूगर्भ प्रगटित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती 108 आचार्य श्री विराग सागर जी

हे विराग सिंधु तव चरणों में हम वंदन करने आये हैं।
हम वंदन करने आये है, अभिनंदन करने आये हैं॥
हे गुरुवर! तेरे चरणों में हम, आरति करने आये हैं॥टेक॥
तुम राग द्वेष अरु मोह त्याग, निज आतम को पहिचाना है।
गृह त्याग धार वैराग्य लिया, परमातम को ही जाना है॥
हे! गुरुवर तेरे.....॥1॥

अल्पायु में वैराग्य धारकर, सत् संयम को पाया है।
तप त्याग साधना के पथ को, जीवन में अपनाया है॥
हे गुरुवर तेरे.....॥2॥

उपसर्ग परीषह बाधाएं, व्याधी कोई भी आएं।
सब समता भाव से सहते हैं, मन में कुछ खेद नही लाएं।
हे गुरुवर तेरे.....॥3॥

शील व्रतों को धारण करके, आतम दीप जलाया है।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति तिय, सम्यक् चारित्र पाया है॥
हे गुरुवर तेरे.....॥4॥

गुरुवर की मुद्रा को लखकर, पुलकित अति हृदय हमारा है।
"विशद" भक्ति मुक्ती का तेरी, गुरुवर एक सहारा है॥
हे गुरुवर तेरे.....॥5॥

आरती श्री विशद सागर जी की

विशद सागर की गुण आगर की।
शुभ मंगल दीप जलाये हो।।
मैं आज उतारूं आरतिया।।टेक।।
नाथूराम श्री इंदर जी के, गर्भ विषें गुरु आए।
घर घर खुशी के दीप जले हैं, सब जन मंगल गाएं।।
गुरू जी, सब जन मंगल गाएं।
गृह त्यागी की वैरागी की, ले दीप सुमन का आज हो।।
मैं आज उतारूं आरतियाँ।।1।।
गुरूवर शील व्रतो के धारी, आतम ब्रम्ह विहारी।
खड्ग धार शिव पथ पर चलते, शिथिला चार निवारी।।
गुरू जी शिथला चार निवारी।
ना रागी की न द्वेषी की शुभ मंगल दीप जलाये हो।।
मैं आज उतारूं आरतियाँ।।2।।
गुरू विराग सिंधु से आकर, तुमने दीक्षा धारी।
तुमने अपने घर को छोड़ा, दुनिया छोड़ी सारी।।
गुरू जी दुनिया छोड़ी सारी।
नारोगी की नाभोगी की, ले दीप रतन मय आज हो।
मैं आज उतारूं आरतियाँ।।3।।
गुरूवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया।
भक्ति भाव से स्तुति करके फूला नहीं समाया।।
गुरू जी फूला नहीं समाया।
ऐसे गुरूवर को ऐसे मुनिवर को, कर वंदन बारंबार हो।।
मैं आज उतारू आरतिया।
विशद सागर की.....।।4।।

आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज की आरती

तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा....)

जय-जय गुरूवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरूवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....।।टेक।।
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरूवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....।।1।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरूवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....।।2।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरू की भक्ति करने वाला....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरूवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....।।3।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरूवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरू की, जन्म सफल हो जायें।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....।।4।।

अतिशय क्षेत्र चूलगिरि जी की आरती

(तर्ज: भक्ति बेकरार है....)

पार्श्वनाथ दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
चूलगिरि जी तीर्थराज की, हो रही जय-जयकार है।।टेक।।
पार्श्वनाथ की मूरत प्यारी, खड्गासन में सोहे जी-2
नेमिनाथ अरु वीर प्रभु जी, जन-जन का मन मोहे जी-2।।
पार्श्वनाथ दरबार है...।।1।।
पद्मासन चौबीसी पावन, मंगल करने वाली जी-2
खड्गासन की चौबीसी भी, सोहे अजब निराली जी-2।।
पार्श्वनाथ दरबार है...।।2।।
वीर प्रभू जी खड्गासन में, सोहें अतिशयकारी जी-2
चरण कमल भी हैं मन भावन, जो हैं मंगलकारी जी-2।।
पार्श्वनाथ दरबार है...।।3।।
आदिनाथ अरु भरत बाहुबली, खड्गासन में गाए जी-2
रत्नमयी प्रतिमाएँ पावन, महिमा जो दिखलाएँ जी-2।।
पार्श्वनाथ दरबार है...।।4।।
देशभूषण गुरु यहाँ पे आके, तीर्थ नया बनवाए जी-2
'विशद' तीर्थ के दर्शन पाने, के सौभाग्य जगाए जी-2।।
पार्श्वनाथ दरबार है...।।5।।

सिंह निष्क्रीडन व्रत की आरती

तर्ज-हम सब उतारे मंगल आरती.....

सिंह निष्क्रीडन व्रत की करते, आरति मंगलकारी-2।
घृत का दीप जलाकर लाए-2, जिनवर के दरबार
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती-2।।टेक।।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध यह, पावन व्रत बतलाया-2
प्रभु की दिव्य देशना पावन-2, जिनवाणी में गाया।। हो बाबा...।।1।।
यह व्रत करने वाले होते, सिंह वृत्ती के धारी-2।
तन-मन-धन से निष्पृह होते-2, पावन जो अविकारी।। हो बाबा...।।2।।
कर उपवास पारणा करते, क्रमशः बढ़ते जाएँ-2
फिर क्रमशः घटते उपास कर-2, व्रत पूरा कर पाएँ।। हो बाबा...।।3।।
वज्र वृषभ नाराज संहनन, आदि गुणों को पाएँ-2।
कर्म निर्जरा करें शीघ्र ही-2, सिद्ध सदन को जाएँ।। हो बाबा...।।4।।
नन्दन मुनि के भव में यह व्रत, महावीर का जीव किया-2।
पुण्य योग से व्रत का फल पा-2, तीर्थंकर पद आप लिया।। हो बाबा...।।5।।

नवनिधि व्रताराध्य की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है....

नव निधि व्रत शुभकार है, अतिशय मंगलकार है।
नवनिधि धारी श्री जिनेन्द्र की, हो रही जय-जयकार है।।टेका।।
शांति-कुन्थु जिन अरहनाथ जी, तीन पदों के धारी जी-2।। नव...।।1।।
कामदेव सुन्दर तन पाते, मन मोहक मनहारी जी-2।
तीर्थंकर नवनिधि चौदह शुभ, होते रत्नों धारी जी-2।। नव...।।2।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, अनन्त चतुष्टय पाएँ जी-2।

दोष अठारह रहित जिनेश्वर, विशद ज्ञान प्रगटाएँ जी-2॥ नव...॥3॥
फाल्गुन माह आषाढ़ कार्तिक, सातें से पूरणमासी-2।
कर उपवास अल्पआहारी, या एकाशन व्रत वासी-2॥ नव...॥4॥
लगातार व्रत करें माहनौ, या इच्छा अनुसारी जी-2।
जिनाभिषेक पूजन कर पावन, जाप करें शिवकारी जी-2॥ नव...॥5॥

कवलचान्द्रायण व्रताराध्य की आरती

तर्ज-हो जिनवर हम सब.....

कवल चन्द्रायण व्रत की आरति, करने को हम आए।
रत्नमयी गौघृत के पावन, हमने दीप जलाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे तेरी आरती-2 ।।1।।
कर उपवास अमावस को फिर, एकम शुक्ला आए।
एक ग्रास लेकर के क्रमशः, दो त्रय बढ़ता जाए ।हो जिन..॥2॥
पूनम को पन्द्रह ग्रास ले, क्रमशः घटता जाए।
एकम को ले एक ग्रास यह, व्रत की विधि कहलाए॥ हो जिन..॥3॥
क्रमशः व्रत करके मावस को, करे पारणा भाई।
चन्द्र प्रभु की पूजा अर्चा, कही जगत सुखदायी॥ हो जिन...॥4॥
कवलचन्द्रायण व्रत में चन्दा, की जो रही कलाएँ।
सुख शांती सौभाग्य जीव शुभ, अपने विशद बढ़ाएँ॥ हो जिन..॥5॥

मेघमाला व्रत की आरती

तर्ज-हो बाबा हम सब....

मेघमाला व्रत की करते हम, आरति मंगलकारी-2।
दुःख शोक दारिद्र निवारक-2, सबके संकटहारी।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती-2।।टेक।।
भादों वदि एकम से अश्विन, वदि एकम तक जानो-2।
व्रत के दिन उपवास करें फिर-2 एकाशन हो मानो॥ हो बाबा...॥1॥
जिन प्रतिमा स्थापित करके, अतिशय न्हवन कराएँ-2।
पूजन करके जाप करें फिर-2, आरति मंगल गाएँ॥ हो बाबा...॥2॥
त्रय एकम के त्रय उपवास कर, दो आठे के जानो-2।
चतुर्दशी के दो उपवास हों, शेष एकाशन मानो॥ हो बाबा...॥3।
श्रेष्ठी वत्सराज सेठानी, पद्म श्री कहलाई-2।
व्रत के फल से स्वर्ग लोक में-2, इन्द्र बने जो भाई॥ हो बाबा...॥4॥
मेघमाला व्रत करने वाले, अतिशय वैभव पावें-2
सुख शांती सौभाग्य जगाएँ-2 विशद मोक्षपुर जाए॥ हो बाबा...॥5॥

नवरात्रि व्रत की आरती

तर्ज-जिनवर के चरणो...

गाएँ जी गाएँ नवरात्री व्रत, की आरति हम गाएँ।
घृत के दीप जलाकर पावन, जिन पद शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन, प्रभुवर के चरणों में नमन-2।टेक॥
भरत क्षेत्र के तृतिय काल में, चौदह कुलकर भाई।

जीवनोपयोगी जगजीवों को, होते ज्ञान प्रदायी॥ जिनवर...॥1॥
अन्तिम कुलकर हुए लोक में, नाभिराय शुभकारी।
मरुदेवी रानी पाए जो, अनुपम महिमा धारी॥ जिनवर...॥2॥
आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, के सौ पुत्र कहाए।।
भरत चक्रवर्ती पद पाकर, चक्र रत्न प्रगटाए॥ जिन...॥3॥
नव दिन का व्रत करके विधिवत, अनुष्ठान कर भाई।
दशवें दिन दिग्विजय हेतु, प्रस्थान किए सुखदायी। जिन...॥4॥
नव दिन धर्म ध्यान कर रात्री, विशद जागरण पाए।
व्रत का उद्यापन कर नृप ने, नये मंदिर बनवाए॥ जिन...॥5॥
जिन प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा, उत्सवयुत करवाए।
नौ हजार मुनि आर्यिकाओं, को जो आहार कराए॥ जिन...॥6॥
पुण्य योग से राज्य लक्ष्मी, का सुख अतिशय पाए।
अर्न्तमुहुर्त में पुण्य के फल से केवल ज्ञान जगाए॥ जिन...॥7॥

त्रिलोक तीज व्रत (रोज तीज) की आरती

तर्ज- हो जिनवर हम सब....

आज करे हम त्रिलोक तीजव्रत, की आरती शुभकारी-2।
सुख शांती सौभाग्य प्रदायक-2, है अतिशय मनहारी।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती-2।।टेक।।
विजय सुन्दरी रानी जिसकी, यथा नाम गुण पाए।
नगर हस्तिनापुर का राजा-2, विशाल दत्त कहलाए॥ हो जिन...॥1॥
ज्ञान सागर मुनिवर के दर्शन, विशाख दत्त ने पाए-2
पितृ शोक से दुखी भूप को-2, मुनिवर जी समझाए॥ हो जिन...॥2॥
यह संसार असार कहा है, नृप को यह बतलाए-2
संयम भूषण रही आर्यिका-2, के दर्शन जो पाए॥ हो जिन...॥3॥
गृहण किया व्रत उनसे पावन, मन में जो हर्षाए-2

जिसके फल से राजा ने कई-2, स्वर्गों के सुख पाए॥ हो जिन...॥4॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर जो गाए-2
दिव्य देशना भवि जीवों को-2, अतिशयकार सुनाए॥ हो जिन...॥5॥

श्री पार्श्व प्रभु की आरती

तर्ज-ॐ जय...

ॐ जय पार्श्वनाथ स्वामी, जय पार्श्वनाथ स्वामी।
आरती कर हम वन्दन करते-2, हे अन्तर्यामी॥ ॐ जय...।टेक॥
काशी नगरी जन्म जिए प्रभु, जन मन हर्षाए-2
अश्वसेन वामा माता के-2, गृह मंगल छाए॥ ॐ जय...॥1॥
तिथि वैशाख द्वितिया को, गर्भ में प्रभु आए-2
पौष कृष्ण एकादशि तिथि को-2, जन्म प्रभु पाए॥ ॐ जय...।2॥
पौष कृष्ण एकादशि को, संयम अपनाए-2
चैत्र कृष्ण की चौथ को प्रभु जी, विशद ज्ञानपाए॥ ॐ जय...॥3॥
श्रावण शुक्ला सातै को प्रभु, हुए मोक्षगामी-2
गिरि सम्मेद शिखर से-2, त्रिभुवन के स्वामी॥ ॐ जय...।4॥
नाग चिन्ह नवहाथ ऊँचाई, हरित वर्ण धारी-2
मान भंग प्रभु किए कमठ का-2, होके अविकारी॥ ॐ जय...॥5॥
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जग में कहलाए-2
दीनबन्धु तव चरणों में हम-2, भक्त विशद आए॥ ॐ जय...॥6॥

श्री बाहुबली जी की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है....

बाहुबली दरबार है, अतिशय बड़ा विशाल हैं।

भक्त यहाँ पर भक्ती करके, होते मालामाल हैं।टेक॥
तीर्थंकर के पुत्र कहाए, कामदेव पद पाया जी-2।
चक्रवर्ती से भूप भरत को, रण में शीघ्र हराया जी-2॥ बाहुबली..॥1॥
जागा जब वैराग्य हृदय में, वन को आप सिधाए जी-2।
एक वर्ष तक खड़े रहे प्रभु, अतिशय ध्यान लगाया जी-2॥ बाहुबली...॥2॥
प्रभु के तन पर जीव जन्तुओं, ने स्थान बनाया जी-2
हाथ पैर में बेले लिपटी, निज में निज को पाया जी-2॥ बाहुबली...॥3॥
तीर्थंकर से पहले ही प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए-2।
भव सागर से पार हुए तुम, शिवपुर नगरी वास किए-2॥ बाहुबली...॥4॥
आरति करके प्रभु चरणों में, 'विशद' भावना भाते जी-2।
ज्ञान ध्यान हो लक्ष्य हमारा, सादर शीश झुकाते जी-2॥ बाहुबली...॥5॥

श्री ऋषभदेव की आरती

तर्ज- बाहुबली की आरती उतारो मिल के....

श्री ऋषभदेव की आरती, उतारो मिल के-2।
उतारो मिल के, छवि निहारो मिल के-2।।
श्री ऋषभदेव की आरती, उतारो मिल के-2।टेक॥
पूर्व भवों में पुण्य कमाए, तीर्थंकर पदवी को पाए-2।
गर्भ में आए थे स्वामी तब-2, देवरत्न वर्षाए मिलके॥ श्री...॥1॥
जन्म प्रभू जी जिस दिन पाए, तीन लोक में आनन्द छाए-2।
मेरु सु गिरि पेन्हवन कराने-2, इन्द्र ऐरावत लाया चलके॥ श्री...॥2॥
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, द्वादश अनुप्रेक्षाएँ ध्याएँ-2।
पंच महाव्रत धारे स्वामी-2, केशो का लुंचन करके॥ श्री..॥3॥
कर्म घातियाँ आप नशाए, पावन केवलज्ञान जगाए-2।
इन्द्राज्ञा से समवशरण की-2, रचना इन्द्र सौ मिल के॥ श्री...॥4॥
योग निरोध किए जिन स्वामी, ध्यान किए जिन अन्तर्यामी-2।
अष्टकर्म का नाश किए प्रभु-2, सिद्ध शिला पर पहुँचे चलके॥ श्री...॥5॥
भक्त आपके द्वारे आए, घृत का दीप जलाकर लाए-2।
'विशद' भाव से आरति करते-2, भक्त सभी भक्ती से मिलके॥ श्री...॥6॥

श्री आदिनाथ जी की आरती

तर्ज-ॐ जय.....

ॐ जय आदिनाथ स्वामी, जय आदिनाथ स्वामी।
जिन मंदिर में आप विराजे-2, हे अन्तर्यामी।।
ॐ जय आदिनाथ स्वामी।।टेक॥
नगर अयोध्या जन्म लिए तुम, जग-जन हितकारी-2।
नाभिराय मरुदेवी के सुत-2, हो मंगलकारी॥ ॐ जय...॥1॥

षट्कर्मों की शिक्षा, पावन आप दिए-2।
तन-मन-धन के दुखियो-2, का उपकार किए॥ ॐ जय...॥2॥
नीलांजना का नृत्य देखकर, प्रभु वैराग्य लिया-2।
राज पाट परिवार स्वजन को-2, तुमने त्याग दिया॥ ॐ जय...॥3॥
कर्म घातिया नाशी प्रभु जी, हुए विशद ज्ञानी-2।
दिव्य ध्वनि श्री जिन की-2, बन गई जिनवाणी॥ ॐ जय...॥4॥
प्रभु आपने जग में, अतिशय दिखलाए-2।
विशद आपके दर्शन-2, करने हम आए॥ ॐ जय...॥5॥

आरती अभिनव कल्पतरु

तर्ज-ॐ जय महावीर प्रभो...

ॐ जय अभिनव कल्पतरू, स्वामी अभिनव कल्पतरू।
परम स्वयंभू जिन की, आरती आज करूँ।
ॐ जय अभिनव...
प्रथम आरती देव-शास्त्र-गुरु, की करते भाई।
जो हैं मोक्ष मार्ग के दाता, जग मंगलदायी॥
ॐ जय अभिनव...
द्वितीय आरति नव देवों की, करते हम स्वामी।
अर्चा करने वाले जिन की, बनें मोक्ष गामी॥
ॐ जय अभिनव...
तृतीय आरति ऋद्धि धारी, मुनियों की करते।
भक्त बनें जो उनके प्रभू, सब संकट हरते॥
ॐ जय अभिनव...
चौथी आरती चौबिस जिन की, करने हम आये।
तीर्थंकर जिन तीन काल के, जग में कहलाए॥

ॐ जय अभिनव...
पंचम आरती सहस्रनाम की, मुक्ती पथगामी।
अष्ट कर्म का नाश किए हैं, जिन अन्तर्यामी॥
ॐ जय अभिनव...
छठी आरती कल्पतरू की, करते हम भाई।
स्वयं स्वयंभू समवशरण में, राजें सुखदाई॥
ॐ जय अभिनव...
सप्तम आरती गणधर की सब, करें भव्य प्राणी।
'विशद' लोक में जग जीवों की, जो है कल्याणी॥
ॐ जय अभिनव...

जिनवर की आरती

तर्ज-आज करें श्री विशदसागर की...

आज करें जिन तीर्थंकर की, आरती अतिशयकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, जिनवर के दरबार॥
हो भगवन, हम सब उतारें मंगल आरती....॥टेक॥
सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाई।
शुभ तीर्थंकर प्रकृति पद में, तीर्थंकर के पाई॥
हो भगवान, हम सब उतारें मंगल आरती...॥1॥
मिथ्याकर्म नाशकर क्षायक, सम्यक्दर्शन पाया।
प्रबल पुण्य का योग प्रभु के, शुभ जीवन में आया॥
हो भगवन, हम सब उतारे मंगल आरती...॥2॥
गर्भ जन्मकल्याणक आदि, आकर देव मनाते।
केवलज्ञान प्रकट होने पर, समवशरण बनवाते॥
हो भगवन, हम सब उतारें मंगल आरती...॥3॥

समवशरण के मध्य प्रभु की, शोभा है मनहारी।
उभय लक्ष्मी से सज्जित है, महिमा अतिशयकारी।।
हो भगवन हम सब उतारें मंगल आरती...।।4।।
सर्व कर्म को नाश प्रभु जी, मोक्ष महल में जाते।
विशद सौख्य में लीन हुए फिर, लौट कभी न आते।।
हो भगवन हम हम सब उतारे मंगल आरती...।।5।।
तीर्थंकर पद सर्वश्रेष्ठ है, उसको तुमने पाया।
उस पदवी को पाने हेतु, मेरा मन ललचाया।।
हो भगवन हम सब उतारें मंगल आरती...।।6।।
नाथ आपकी आरती करके, उसके फल को पाएँ।
जगत् वास को छोड़ प्रभु जी, मोक्ष महल को पाएँ।।
हो भगवन हम सब उतारे मंगल आरती...।।7।।

गुरुवर की आरती

(तर्ज-भक्ति हैं....)

गुरुवर का दरबार है, जग में मंगलकार है।
जैन धर्म की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।टेक।।
घृत का दीप जलाया हमने, आज यहाँ पर लाए जी।
भक्ति भावना से भरकर, आरति करने आए जी।। गुरुवर..।।1।।
दूर-दूर से लोग यहाँ पर, गुरु भक्ति को आते हैं।
भक्ति भाव से गुरु चरणों में, नत मस्तक हो जाते हैं।। गुरुवर...।।2।।
वीतराग गुरुवर की मुद्रा, मोक्ष मार्ग दर्शाए जी।
भव्य जीव गुरु दर्शन करके, मन ही मन हर्षाए जी।। गुरुवर..।।3।।
गुरु के चरणों का गंधोदक, जिनको भी मिल जाता है।
जीवन में सौभाग्य परम तब, उनका भी खिल जाता है।।4।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, श्री गुरुवर की वाणी है।
'विशद' ज्ञान प्रगटाने वाली, जग जन की कल्याणी है।। गुरुवर...।।5।।